Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 19 अंक 08 30 अगस्त, 2019 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

परम्परायें अभिमान या अभिशाप

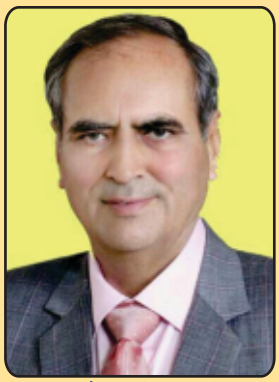

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

किसी भी राष्ट्र का कानून तथा संविधान उसी राष्ट्र की परंपराओं पर ही आधारित होता है, ताकि समाज को अनुशासित रखा जा सके तथा एक सूत्र में पिरोया जा सके। विडंबना है कि कई बार इन दोनों में आमना–सामना, ओड़ आने तथा टकराव की स्थिति भी बन जाती है।

भारत में क्रिकेट कानूनन थोपा नहीं गया है लेकिन इसने हमारे पारंपरिक खेलों को दबाकर रख दिया है। हमारी परंपरा मल्य युद्ध रही है, हाकी, फुटबाल, मिट्टी में कुश्ती तथा कब्बडी, यहां तक के हमारे बचपन के खेल कहीं खो गए हैं और हर्ष है कि जापान जैसे देश मे इन्हें खोज निकाला है वहां रस्साकशी, रस्सी कूदना, पींग, गुल्ली–डंडा, छटापू, पिट्ठू जैसे खेल दिन प्रतिदिन लोकप्रिय होते जा रहे हैं। बड़ों के पांव छूना और आर्शीवाद लेना हमारी संस्कृति थी, हम भूल गए लेकिन जापान ने इसे अपना लिया।

परंपराओं में सुधार लाना बुरी बात नहीं है– क्योंकि कालांतर इनमें– जातिय, धार्मिक तथा क्षेत्रीय मान्यताओं के कमावेश से वैचारिक प्रदूषण आ जाता है– जिसकी परिभाषा कानून के दायरे में उल्लंघन या टकराव की स्थित पैदा कर देता है। समय विचार'' विकासात्मक गतिविधियों में ऐसी स्थिति कई बार हो जाती है, जैसे सड़क, रेल मार्ग, सिंचाई नहर की खुदाई इत्यादि के रास्ते में कोई धार्मिक स्थल आ जाए– तो धर्म के ठेकेदार उसे अपनी मूंछ का सवाल बनाकर समाज को गुमराह करने में संकोच नहीं करते, इससे राष्ट्र की कितनी क्षति होती है– सरकारी संपति को नुकसान पहुंचाना– कानून की धज्जियां उड़ाना शान समझी जाती है और हमारे न्यायलय ऐसी स्थिति को निपटने में कनी काटते हैं या देरी करते हैं।

हमारी संस्कृति और सामाजिक परंपराओं को बनाए रखने से भाईचारे की भावना बनी रहती है– लेकिन अगर थोड़ा विवेक जोड़ लिया जाए तथा कानून में रहते हुए भी समाधान निकाले जा सकते हैं। घर में ही वैचारिक मतभेद हो जाते हैं– तब हम तोड़–फोड़ पर उतारू नहीं होते, अक्सर समझौते होते हैं– पति–पत्नी, भाई–बहन में मतभेद होते हैं जिन्हें ले देकर समझौता हो सकता है लेकिन परंपराओं के नाम पर किसी को बाध्य नहीं किया जा सकता– उदाहार्थ हमारी परंपरा पांव छू कर आर्शीवाद लेने की है तो किसी को हाथ मिलाने पर मजबूर करने से दूसरे की भावना आहत हो सकती है– जैसे हमारे समाज में महिलाओं से हाथ मिलाने की परंपरा नहीं है– अगर वे संकोच करें तो उनकी भावना का आदर करें।

यहां ऐसी ही एक उदाहरण है कि अमरीका जैसे विकसित देश ने 1920 में कानूनन शराबबंदी कर दी, लेकिन जो कभी सामाजिक मान्यता हासिल ना कर सका वर्ष 1933 में हालात बेकाबू हुए और इसे हटा दिया गया– क्योंकि कानून और परंपरा में टकराव रहा। भारत के कुछेक राज्यों में आज भी शराबबंदी है, लेकिन वहां तस्करों का बोलबाला है– क्योंकि कानून तोड़ना मानव की प्रवृति है और इसे शान समझा जाता है। हरियाणा भी वर्ष 1986 में ऐसी शराबबंदी कर चुका है– जिसे उसी सरकार में ही वापिस करने को बाध्य होना पड़ा। यही हाल बिहार में नीतीश कुमार जी की सरकार का शराब बन्दी लागू करने के बाद हुआ था। शराब अच्छी नहीं है– लेकिन किसी भी स्थिति को थोपना सर्वहितकर नहीं होता। अतः मध्यम मार्ग ही उचित है।

शेष पेज–2 पर

परिवार परिचय सम्मेलन 02 अक्तूबर 2019 को किया जायेगा

जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकुला द्वारा 2 अक्तूबर 2019 को सवेरे 10 बजे से सायं 4 बजे तक "परिवार परिचय सम्मेलन" का आयोजन सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकुला में किया जायेगा। जिसमें विवाह योग्य युवक–युवतियों का पारिस्परिक परिचय करवाया जायेगा। अतः विवाह योग्य युवक–युवतियों का नाम, पिता का नाम, लड़का या लड़की, टेलीफोन नम्बर, आयु, लम्बाई, स्थाई पता व फोटो सहित सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकुला में 30.09.2019 तक भेंजे। इस सम्मेलन में भाग लेने वाले युवक–युवतियों व उनके माता–पिता/अभिभावको के लिए भवन परिसर में निःशुल्क रात्रि विश्राम व खाने की व्यवस्था भी की जायेगी।

अतः आप सभी से निवेदन है कि इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये अधिक से अधिक संख्या में भाग लें।

अधिक जानकारी के लिये 6283526512, 8950017700, 9888004417, 9466205869 नम्बरों पर सम्पर्क करें।

शेष पेज–1

सजातिय विवाह एक अच्छी परंपरा है, जिसे वैज्ञानिक तौर पर भी मान्यता मिल चुकी है। उसमें भी समगोत्र विवाह वर्जित है जो (मनु समृति) में भी वर्णित है– लेकिन खाप पंचायतों ने लड़के–लड़की को मारने तक के आदेश तक दे दिए– यह बर्बरता है एक केस में तो दंपति के बच्चा भी पैदा हो चुका था और उन्हें शादी तोड़ने तथा राखी बंधवाकर भाई–बहन बनाने के लिए मजबूर किया गया। पंचों में परमेश्वर हमारी परंपरा रही है, पंचायत में बैठकर पंचों ने अपने ही बेटे को दोषी तक करार दिया था। खाप–पंचायतों ने ऐसी स्थित को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है– जिसमें इनकी जितनी भी सराहना की जाए उचित होगी। लेकिन कालांतर इस पावन संस्था में भी व्यक्तिगत हित ऊपर आ गए और अपनी व्यक्तिगत दुश्मनी या नापसंदी से दूसरे को परिताड़ित करवा दिया। विश्व–विख्यात ''स्केडेनेवीयन कानून'' हमारी भारतीय परंपराओं पर ही आधारित है, अगर भारतीय समाज इसे अपना ले तो कोई क्षति नहीं होगी– क्योंकि उन्होंने इन्हीं परंपराओं को विज्ञानिक आधार पर ढालकर कानून का दर्जा दिया है, इससे राष्ट्र का भला ही होगा। अक्सर इन परंपराओं को मानने वाले तथा ना मानने वाले अधूरा ज्ञान लिए होते हैं और वे दोनों पक्ष अपने स्टैंड पर बजिद्द होते हैं।

खाप–पंचायतों को कभी वैधानिक मान्यता प्राप्त रही है– अगर समयनुसार उसमें आधुनिक युग की जरूरत और कानून को समावेश कर दिया जाए तो यह समाज के लिए हितकर ही होगा। विश्व विख्यात भारतीय संस्कृति, सभ्यता, शिक्षा और न्याय प्रियता पर सभी भारतीयों को गर्व की बात है। हयूनसांग ने इस अद्भुत शिक्षा प्रणाली का जिक्र गर्व से करते हुए कहा है कि इनमें ''राजा और रंक'' को एक सी शिक्षा– एक सा रहन–सहन– एक सा भोजन आश्रम के अनुसार निशुल्क प्रदान किया जाता था, तथा यह गुरूकुल भारत के सिवाय दक्षिण एशियाई देशों तक के विद्यार्थी यहां शिक्षा लेने आते थे। लार्ड मैकले ने अठारवीं सदी में यह पद्धति का नाश किया, ताकि हमें अग्रेजी ज्ञान के साथ–साथ अपनी विरासत पर गर्व ना रह सके।

भारत के विश्व प्रसिद्ध चारों वेदों की रचना हुई। यहां भारत जैसे युद्ध के साथ ग्रंथ और 'गीता' जैसे उपदेश की रचना हुई और 'रामायण' जैसे ग्रंथ विश्व के मार्ग दर्शक बने। ऐसी धरोहर के मालिक आज हम छोटे–छोटे झगड़ों और मसलों में उलझे हुए हैं। क्यों ना हम हमारी अमीर संस्कृति–सभ्यता और परंपराओं की तलाश करें। खाप पंचायतों को उनका खोया गौरव लौटाएं यहां हरेक को ''शिशुहक बेलाग–बेदाग'' मिलता था।

हर समाज में कुरीतियां आती हैं। हमारे यहां सदियों की गुलामी–धर्म परिवर्तन हुए जिससे इन परंपराओं को आघात पहुंचा। मुसलिम जुल्मों से बचने हेतू सती प्रथा तथा जौहर तक हुए लेकिन समय–समय पर समाज सुधारक भी पैदा होते रहे। नए धर्म भी बने। लेकिन उन्होंने हिंदु धर्म तथा परंपराओं को कभी नुकसान नहीं होने दिया, जिसमें सिख, बौद्ध तथा जैन धर्म विशेष उल्लेखनीय हैं। अंध विश्वास को खत्म करने में इन्होंने बहुत अच्छी भूमिका निभाई। 19वीं सदी में राजा राममोहन राय– स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, महात्मा अरविंदो और गुरू नानकदेव जी की भूमिका सराहनीय है। इससे हमारी सभ्यता और परंपराओं का जीर्णोधार हुआ तथा आधुनिक भारत की संस्कृति को पहचान मिली।

पीपल के पेड़ की पूजा एवं उसकी सुरक्षा प्राचीन परम्परा है और आज पर्यावरण बचाने हेतू रामबाण सिद्ध हो रही है। हर कोई जानता है कि पीपल का पेड़ छाया के साथ–साथ रात–दिन आक्सीजन ही देता है, जो जीवन दायिनी है। आज हम जागृत हो चुके हैं तथा पेड़ों की महत्ता को समझकर वनों का विकास करने हेतू प्रयासरत हुए हैं।

विवाह–बिरादरी में हो– बारात एक गवाह और शादी की मान्यता का माध्यम है। विधवा अथवा तलाकशुदा स्त्री हेतू भी 'चादर अंदाजी विवाह' है। जाट तथा सिख इसके लिए उद्धार रहे हैं लेकिन ब्राह्मणों ने इसे मान्यता नहीं दी है। मौजूदा सरकार ने मुस्लिम महिलाओं को भी 'तीन तलाक' जैसी प्रथा से राहत दिलवाई है। सक्षम विवाह अधिनियम 1955 के खंड 5 के 4 तथा 5 सपिंड संबंध एवं विषिद्ध संबंधों की स्पष्ट व्याख्या की है। लेकिन मुस्लिम समाज 1937 के बाद इस प्रतिबंध से युक्त है तथा यहां सगोत्र विवाह आम है फिर भी हरियाणा के मेवात क्षेत्र में सगोत्र विवाह निषेध है।

विडंबना यह भी है कि बलात्कार पीड़िता को समाज दोषी मानता है और दोषी स्वछंद घूमता है और ऐसे जघन्य अपराध करता रहता है– हाल ही में कुछेक राजनेता ऐसे घृणित कार्या में संलिप्त पाए भी गए हैं, लेकिन पीड़िता की सराहनीय भूमिका ने उन्हें सलाखों के पीछे पहुंचाकर ही दम लिया जैसे पूर्व में जासिका लाल का कत्ल और हाल ही में उत्तर प्रदेश में विधायक द्वारा एक महिला का पहले बलात्कार, उसके पिता का कत्ल और बाद में उसी महिला पर जानलेवा हमला।

सम्मान के लिए हत्याएं– कथित तौर पर औरत का अनैतिक व्यवहार जिससे परिवार की प्रतिष्ठा को आघात पहुंचा हो। यह विश्व व्यापी है। एक अंदाजे से विश्व भर में प्रति वर्ष 5000 से अधिक सम्मान हत्यायें होती हैं। लंदन मैट्रोपोलिटन विश्वविद्यालय के सर्वेक्षण के अनुसार केवल भारत में वार्षिक सम्मान हत्याये होती हैं। ऐसे मामले जार्डन, पाकिस्तान, लीबिया, मोरक्को, ब्राजील तथा लैटिन अमरीकी देशों में घटित हुई हैं। वर्ष 2009 में (टर्की) के एक न्यायलय ने बलात्कार के दोषी एक ही परिवार के पांच सदस्यों को आजीवन कारावास की सजा दी थी। करनाल में (मनोज–बबली) केस के पांच आरोपियों को मृत्युदंड तथा अन्यों को आजीवन

जुआ सुख, संपत्ति और समय इन तीनों का, जो जीवन के लिए अति मूल्यवान है, नाश करता है। –अज्ञात

कारावास दिया। लेकिन भारतीय कानून में सम्मान हत्या जैसे किसी शब्द का उल्लेख नही है 2006 में सर्वोच्च न्यायलय ने इसे बर्बरता करार दिया। अंतर जातीय विवाह राष्ट्रहित में है, इससे जाति प्रथा समाप्त होगी– किसान नेता चौधरी चरण सिंह इसके पक्षधर थे।

भारतीय दंड सहिता में वधु को जलाने–दहेज उत्पीड़न 304बी तथा दहेज उत्पीड़न धारा 498–ए पीड़ित पक्षों को राहत देने में नाकाफी रही है, बल्कि दोनों धाराओं का जमकर दुरूपयोग हुआ है। सर्वोच्च न्यायलय में भी इन प्रावधानों पर पुनः विचार करने की व्याख्या दे चुका है। घरेलू हिंसा के 15320 से अधिक मामले दर्ज हुए– 40 प्रतिशत महिलाएं प्रतिवर्ष इसका शिकार हो रही है।

खाप पंचायतें सामुदायिक समुहों पर आधारित 3000 वर्ष से भी अधिक पुरानी परंपरागत संस्थाएं हैं। खाप शब्द जिसे पंजाबी में 'खप' कहा जाता है, का अभिप्राय 'बातें व चर्चा' से है। इनके द्वारा अपने क्षेत्र में नैतिकता, सांप्रदायिक सौहार्द को बनाए रखने तथा परिवार व समुदाय के सम्मान की रक्षा के लिए समाज में प्रचलित रीतियों व परंपराओं के अनुसार विचार–विमर्श करके सामाजिक मुद्दों पर उचित निर्णय लिए जाते हैं। खाप पंचायतों का अपना गौरवशाली इतिहास रहा है और ये अपने क्षेत्रों में शांति तथा भाईचारा कायम रखने में आरंभ से ही सक्षम रही हैं। खाप पंचायतों ने समय–समय पर मातृभूति की सुरक्षा, बचाव तथा अखंडता को बनाए रखने के इलावा अन्याय, तानाशाही के खिलाफ लड़ी गई लड़ाईयों में भरपूर सहयोग दिया है। इनके मुख्य कृत्यों का वर्णन निम्न प्रकार से हैः–

1. मुगलों के विरूद्ध लड़ाई में गुरू गोबिंद सिंह तथा बंदा बहादुर सिंह का साथ दिया।
2. अलाऊद्दीन खिलजी व औरंगजेब के साथ लड़ी लड़ाईयों में इंडो–सिक्ख युद्ध के दौरान महाराज रणजीत सिंह की मदद की।
3. ईस्ट इंडिया कंपनी/ब्रिटिश साम्राज्य से टक्कर लेकर 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में सम्राट बहादुरशाह जफर तथा रानी लक्ष्मी बाई को सहयोग दिया क्योंकि ईस्ट इंडिया कंपनी तथा लार्ड डलहौजी के 'गोद लेने के सिद्धांत' से संबंधित तथा कुछ अन्य निर्णय भारतीय परंपराओं के विरूद्ध थे। इसी प्रकार गाय का मांस/चर्बी लगे कारतूसों से भी भारतीय सेना में 1857 में ही विद्रोह पैदा हो गया, जोकि हमारी धार्मिक परंपराओं से जुड़ा है।
4. शत्रु देशों व बाहरी आक्रमणों के खिलाफ लड़ी गई 1962, 1965 व 1971 की लड़ाईयों व हाल ही में लड़े गये कारगिल युद्ध में भी खाप पंचायतों का देश की सुरक्षा के लिए अहम योगदान रहा है।
5. गौ हत्या के खिलाफ चलाए गए आर्य समाज के अभियान में सहयोग दिया। यद्यपि गौवध पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया तथा इस संबंध में 'गौ हत्या प्रतिबंध कानून' भी बनाया गया है, फिर भी गऊ हत्याएं निरंतर हो रही हैं।

दुर्भाग्यवश एक ही गोत्र तथा गांव के साथ लगती सीमाओं में की जा रहीं शादियां एक सामाजिक समस्या बन गई है और इस प्रकार की शादियां सामाजिक अपराध के तौर पर उभर गई हैं क्योंकि ये हमारी रीति–रिवाजों के विरूद्ध हैं। हिंदूस्तान टाइम्स समाचार पत्र द्वारा हाल ही में किए गए सर्वेक्षण के अनुसार 62 से 70 प्रतिशत लोग एक ही गोत्र व गांव में शादि करने के खिलाफ हैं, जबकि चंडीगढ़ व आसपास के क्षेत्रों के 65 प्रतिशत लोगों ने एक ही गांव व गोत्र में की जा रही शादियों के विरूद्ध मत व्यक्त किया है। हरियाणा में 77 से 81 प्रतिशत व्यक्ति समगोत्र शादियों के खिलाफ हैं। प्रजातंत्र प्रणाली में बहुसंख्यक वर्ग की इच्छा प्रबल होती है। हालांकि उत्तरी भारत की कुछ खाप पंचायतें हत्या करने तथा घर/गांव छोड़ने जैसे आदेश सुनाने के कारण सभ्य वैध प्रणाली का मजाक बन कर रह गई हैं इसलिए किसी भी खाप पंचायत को कानून का उल्लंघन करने तथा अवैध आदेश जारी करने की अनुमति नहीं दी जा सकती ।

प्रायः यह देखा गया है कि मीडिया की भूमिका स्पष्ट नहीं है बल्कि खाप पंचायतों से संबंधित मामलों के प्रकाशन के संबंध में इन पर सवालिया प्रश्न लगने लगे हैं। समय–समय पर मीडिया तंत्र अनेकों राजनैतिक दल तथा प्रभावशील व्यक्तियों द्वारा प्रभावित होता है। कई बार मीडिया ताजा समाचार प्रदर्शित करता है। मैं इस विचार से भी सहमत हूं कि कुछ खाप पंचायतों द्वारा दिए गए निर्णय तर्कहीन होते हैं और ये पंचायतें निहित स्वार्थी तत्वों द्वारा संचालित की जाती हैं। इसलिए मैं मीडिया तंत्र पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के ये विचार व्यक्त करता हूं कि– 'समाचार पत्र का एक उद्देश्य लोगों की लोकप्रिय भावनाओं को समझना व इनको अभिव्यक्ति देना है, दूसरा लोगों के बीच वांछनीय भावनाओं को उजागर करना व तीसरा प्रसिद्ध दोषो/बुराईयों को बेनकाब करने के लिए जनता में निडरता के भाव पैदा करना।'

सिफारिशें व सुझाव

शादियों पुरानी परंपराओं व रीति–रिवाजों के कानून के हथौड़े से नहीं दबाया जा सकता है। इसलिए राजा राम मोहन राय की तर्ज पर आधुनिक विचारों तथा परंपरागत विचारों के समिश्रण से सामाजिक सुधारों पर आधारित दृढ़ इच्छा शक्ति से एक जन चेतना अभियान चलाने की आवश्यकता है।

इसी प्रकार खाप पंचायतों को गैर कानूनी निर्णय सुनाने तथा अपराधिक रोकथाम संबंधी कानूनों के प्रभाव क्षेत्र में अतिक्रमण करने से परहेज करना चाहिए। खापों को प्रजातंत्रात्मक प्रणाली अपनाकर अपनी संस्थाओं में शरारती तत्वों के प्रवेश को बंद करना चाहिए।

यहां तक कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी खाप पंचायतों की भूमिका की सराहना करते हुए सुझाव दिया कि खापों को समाजिक समस्याओं व मसलों का सही निपटारा करते हुए अपने कार्यक्षेत्र में निम्नलिखित मुद्दों को शामिल करना चाहिए:–

1. कन्या शिक्षा को बढ़ावा देना
2. गांवों में स्वास्थ्य व स्वच्छता की व्यवस्था करना
3. सार्वजनिक स्वास्थ्य उपयोगिताओं की व्यवस्था करना
4. गांवों में कुओं व तालाबों के रख–रखाव की व्यवस्था करना
5. दलित व गरीबों के सुधार के लिए कार्य करना

इसलिए खाप पंचायतों को अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को फिर से प्राप्त करने के लिए कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, महिलाओं के विरूद्ध बढ़ रहे अपराधों व नशावृति पर रोकथाम लगाने जैसे सार्वजनिक महत्व के मुद्दों पर प्रभावी ढंग से कार्य करना चाहिए।

कर्नाटक में आज भी 'देवदासी प्रथा' प्रचलित है जिसमें लड़कियों/महिलाओं को तमाम उम्र कंवारी रहकर सख्त अनुशासन का पालन करने के लिए मजबूर किया जाता है। इसी प्रकार से हर साल आसाम, बिहार, झारखंड जैसे राज्यों में बहुत सी महिलाओं पर चुड़ैल/डायन का आरोप लगाकर हत्या कर दी जाती है और वर्ष 2001 से 2008 के बीच झारखंड में इस प्रकार की 452 महिलाओं की हत्या किए जाने की खबरें हैं। जाति प्रथा भारतीय समाज के लिए एक अभिशाप है। वर्ष 1931 में पहली बार जातिगत जनगणना की गई थी जिसे 21वीं सदी में अर्थात 2011 में पुनः दोहराया जा रहा है, जिससे जाति प्रथा को और अधिक बढ़ावा मिल सकता है।

अतः सरकार से अनुरोध है कि खाप पंचायतों की वास्तविक मांग अर्थात समगोत्र व एक ही गांव में की जा रही अवैध शादियों पर पूर्ण रोक लगाना व इस संदर्भ में हिंदू विवाह अधिनियम 1955 तथा विशेष विवाह अधिनियम 1954 में आवश्यक संशोधन करने की मांग पर गम्भीरता से विचार करे। यह भी एक विदित तथ्य है कि इस संदर्भ में कुछ दक्षिणी राज्यों द्वारा पहले से ही अपने स्थानीय रीति–रिवाजों व परंपराओं के अनुसार हिंदू विवाह अधिनियम 1955 में आवश्यक संशोधन किए जा चुके हैं।

डॉ0 महेंद्र सिंह मलिक
आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति एवं
जाट सभा, चंडीगढ व पंचकुला

Faltering Indian Economy

- R. N. Malik

Today the Indian economy is both faltering and fluttering. GDP growth fell from 7.06 % to 5.83% by March 2019. Figures of GDP growth for April-June quarter have not been released till now. The reasons not known. Arvind Subramanian, the Chief Economic Adviser of Modi government further confused the issue when he revealed that method of calculating GDP growth was flawed and calculated figures were 2.0 % higher than the actual in the past. The Finance Ministry repudiated the claim but not vociferously. Other economists also did not raise the alarm and the issue still remains unresolved. The procedure for calculating GDP growth was definitely changed during Modi regime and even Yaswant Sinha called the figures to be exaggerated. Famous economist Swaminathan Aiyyer also wrote that smell of 7% growth was not visible .An insipid budget this year has further created a cloud of gloom.

The signs of a serious economic downturn became clearly visible when figures of growth in core sectors of economy were released by the government for April-June and found to be only 0.2 % against 4.83 % last year meaning there by that overall GDP growth for the same quarter is going to around 5% only.

Now the Finance Minister Nirmala Sethuraman has also admitted the existence of downturn in the Indian economy. The Prime Minister too has acknowledged the same fact in his interview given to Economic Times on 12th August 2019. The government attributes the downturn to general recession in the world economy, fall in the aggregate domestic demand particularly in the automobile sector and drying up of private investment. Trading class on the other hand lays the blame squarely on demonitisation and complex GST regime. But most triggering factors are low investment on infrastructure projects and fall in exports. Rising NPAs in banking sector and stress in the non-banking financial companies(NBFC) has further dampened the investment and business environment. Falling of business houses like Essar Steel, Bhushan Steel , Lanco,Infratech and ABG Shipyards has further reduced optimism for revival of economy. Severe crisis in aviation sector is becoming more and more worrisome. Jet Airways and Kingfisher crashed from the sky to the ground. Other profit making airlines like Indigo, Spicejet and Go Air incurred losses varying between Rs.149 to 897 crore for the first time in the preceding year. Air India the biggest white elephant incurred a loss of 4600 crore. Most distressing fact is that the government of India remained as a silent spectator as if these columns of industry were falling in some neighbouring country. Now you talk to any trader or businessman and his stock reply would be "We are totally undone. "

Now the government set up a committee to suggest ways and means to reverse the trends. The group has come out with following recommendations.

1. Boost nfrastructure investment.
2. Specific sectors like auto industry to be given relief in GST regime.
3. Cut red-tape in cross-border trade.
4. Improve ease of doing business.

Desirability of these measures is already known to everyone in the business circle and amounts to only cosmetic surgery. The government is behaving as if it has come to power for the first time and cannot be more naive than this. The fact of the matter is that government is clueless about the measures to be taken to spur growth urgently. Even NITI AYOG is not helping the government to come out of the mess/morass.

The basic measures to boost growth are spur in exports, reduction of imports, massive investment in infrastructure projects, reforming loss making public sector undertakings, saving the Private Sector units particularly MSMES by addressing their genuine demands.

1. Boosting exports.

Growth in exports will improve if all irritants faced by exporters are adequately addressed. Secondly all bottlenecks to reduce travel time between factory gates and seaports are removed. This will be possible if freight corridor and expressway projects are completed on war footing . There is a dire need to construct a modern seaport at Surat to reduce congestion at Mumbai. But real breakthrough will be achieved when modern industrial parks and special economic zones are set up along the coastlines.

2. Reducing imports.

Main items of imports are crude oil, gas and defense equipment. (36 Rafale Jets cost Rs. 58000/- crore) There are five ways to reduce the imports. 1. Make all the trains run electically and increase their share of passenger and freight traffic by at least 30 %. 2. Strengthen mass Transport in all the urban areas on a war footing. Look at how DMRC is carrying 45 lac people daily and saving huge amount of diesel and petrol besides improving the environment. 3. Explore more hydrocarbons within the country. 4. Special efforts be made to reduce the import of Chinese products, cars and gold. Ludhiana Industries are facing crises only because flooding of Chinese stuff 5. Manufacturing defense equipment with in the country.

3. Investment in infrastructure projects.

There are 13 core sectors where massive investment is needed urgently and most these sectors are not on the government radar at present. These are 1. Hydropower development. 2. Water resources development and extension of irrigation facilities in drought prone states. 3. Railway projects consisting of electrification and doubling of tracks, laying new railway lines and running more trains on underutilized tracks. 4. Strengthening mass transport system. 5. Providing 100 % drainage, sewerage and solid waste management systems. 6. Providing circular roads in all urban towns and removing traffic bottlenecks. 7. Building 30 new modern towns in all the states to act as sub-capitals of respective states. 8. Setting up modern industrial parks along the coastlines. 9. Horticulture and dairy development projects in 7 N-E states. 10. Creating tourist hot spots in various states. 11. Building expressways and freight corridors. 12. 13. Extensive development of solar energy for power, heating and cooking purposes, installing industries for defense production to save valuable foreign exchange,

Massive investments on these projects will propell growth, keep recession at an arms length, solve unemployment problem and eradicate poverty.

Infrastructure is the main key to open the doors of prosperity. For example, construction of storage dams in Yamuna and Ganges river basins will store lot of run-off to be utilized for irrigation, power generation and flood control. Now this valuable water is flowing wastefully to the sea. The devastating floods in four states could be converted into a boon if the respective states had built adequate water harvesting structures.

4. Improving efficiency of public sector.

Most public sector units are running very ineficiently and incurring heavy losses. Air India is the most shining example. HAL has become synonymous with long delays in supplying equipment to IAF. Power utilities in all the states have become debt traps. ILFS is under a debt of 1.25 lac crore and the government does not know what to do. Such units should either be wound up quickly or made to run efficiently to avoid a mountain of losses.

5. Helping private sector units.

This help consists of two parts. A. Prevent big units from collapse by mid course correction. B. To help MSMES (Micro,Small and Medium Enterprises) by addressing their genuine grievances.

A. Preventing collapse of big units. Government or banks need to keep a vigil on the performance of big units before doling out big loans. The country suffers in two ways when these units finally collapse. Collapse of Jet Airways caused a lay off of 25000 employees and NPA of Rs. 10000 crore. Same is the case of Kingfisher. Secondly collapse of big units gives a big setback to ancillary units causing further acute financial and employment problems. Such collapses are preventable by mid course corrections imposed by government or the banks.

B. Helping MSMES

MSMES are responsible for generating 45% foreign exchange and employment to 12 crores people.These units are under great stress due to number of factors like liquidity crunch or aggressive inspector raj. Hence these units deserve special attention of the government for redressal of their genuine demands.

These five factors are the five pillars on which the entire economic super structure rests. The economy will not be revived till these issues are addressed with push button efficiency. It is a fact that some big ticket projects require massive inflow of money

and the annual budget only providing fig leaf. Unfortunately,Indian budgets have never been coterminous with plan projections. Large number of railway projects are languishing for want of adequate flow of funds for the last 20 years. Total requirements are stated to be Rs. 200 lac crores. To add woes to the planning process, Railway abandoned the practice of presenting its own budget.

To add discomfiture to the government, it has already breached the target of 3.5% GDP fiscal deficit limit as specified by FRMB Act. Now it is desperately trying to explore the deviation clause to cross the limit by 0.5% . Also it is berating the RBI to disgorge Rs. 3 lac crore kept as buffer stock - an attempt being resisted by RBI. To tide over the impass the government needs to use money locked in banks mostly for infrastructure projects. Secondly the government needs to study the development models of China and Singapore who were placed in similar situations way back in 1978. The government has placed itself in this despicable situation by committing two silly mistakes. Firstly it scrapped the Planning Commission and replaced it with effete NITI AYOG. Secondly it is still moving without a precise road map to build a $ 5 trillion economy by 2024. Consequently it is groping in the dark and relying on jumlas.

Time has come when the government should realize that the country is in the throes of an impending recession and cosmetic surgery will not do. It requires a brain storming session to find ways to galvanize the economy. Now she is in a "Now or Never" position. The prolonged economic crisis is eroding the confidence of people, according to the latest Consumer Confidence Survey of July 2019 conducted by RBIs. The government can ill - afford to close its eyes like a pigeon in face of a cat and go on harping on economic reforms like GST and Banking Insolvency Code

बढते अपराध बढा रहे हर वर्ग की चिंता

–डॉ. महेंद्र सिंह मलिक

पिछले ही महीने की बात है। कांग्रेस पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता विकास चौधरी सुबह घर से जिम के लिए निकले थे लेकिन जिम के आगे ही दो हमलावरों ने विकास को जिम के बाहर 8–10 गोलियां मारी। वारदात को अंजाम देने के बाद कार से हमलावर भाग गए। घटना का एक सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है। इसमें नजर आ रहा है कि जिम के बाहर कार से उतरते ही हमलावरों ने विकास को कई गोलियां मारी। पुलिस की जांच में सामने आया कि विकास की हत्या एक गैंगस्टर ने फिरौती के लिए की थी और वो गैंगेस्टर अभी पुलिस की पकड से बाहर है। देश की एक प्रमुख विपक्षी पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता की सरेआम हत्या और वो भी फिरौती के लिए कानून व्यवस्था पर बडे सवाल खडे करती है।

इसके कुछ दिन बाद ही जुलाई में हरियाणा के करनाल जिले में दिनदहाड़े बाइक सवार अज्ञात बदमाशों ने शहर के जाने माने डॉक्टर राजीव गुप्ता की गोली मारकर हत्या कर दी। डॉ. राजीव गुप्ता की हत्या ने खट्टर सरकार की कानून व्यवस्था पर कई सवाल खड़े कर दिए। जांच में दिवंगत डॉक्टर के ही एक सहयोगी का नाम सामने आया। इसके बाद जयपुर में एक गैंग पकडा गया जो लोगों का अपहरण कर उन्हें लैट में रखकर लगातार फिरौती वसूलते थे। जांच में सामने आया तो हरियाणा के युवक सामने आए और पकडे गए। ये सिर्फ हाल फिलहाल की चंद घटनाएं हैं अगर आप क्राइम रिकॉर्ड खंगालने लग जाएं तो हर तरह के अपराध में न केवल प्रदेश में, देश में ही अपराध बढ रहे हैं।

महिलाओं के विरूद्ध अपराध में कोई कमी नहीं लाई जा सकी है। साइबर क्राइम, फिरौती, हत्या और लूटपाट की घटनाएं देश के लोगों को लगातार आतंकित कर रही हैं। और तो और बच्चे भी सुरक्षित नहीं हैं। आज हम देश के भविष्य की हालत क्या है इस पर ही बात करते हैं। अभी जुलाई में ही दल्ली में एक बच्ची के साथ दरिंदगी सभी को हताश कर रही है। दिल्ली के द्वारका इलाके में 6 साल की बच्ची से रेप हुआ। लड़की उससे पहले पास के एक मंदिर में खेल रही थी। आरोपी वहीं से उस बच्ची को फ्रूटी दिलाने के बहाने लेकर गया दरिंदगी करके झाड़ियों में फेंककर भाग गया। लड़की किसी तरह सरकती–सरकती सड़क तक आई। वहां से गुजर रहे शख्स ने उसे देखकर पुलिस को बुलाया था। अभी लड़की सफदरजंग अस्पताल में भर्ती है। वहां 6 वर्षीय रेप पीड़ित बच्ची के पिता कहते हैं, दिल्ली का बड़ा नाम सुना था। दो वक्त की रोटी के लिए कमाने आए थे। क्या बताएं कि क्या हुआ।' आंखों में हताशा, निराशा लिए उन्होंने कहा– 'बिटिया आज ही थोड़ा–थोड़ा बोली है पापा–पापा। और कुछ नहीं बोल पा रही है।' ये हताशा केवल एक बच्ची के पिता की नहीं है बल्कि हर संवदेनशील इंसान की है। बच्चे दरिंदगी का आसान शिकार बन रहे हैं। भारत सरकार द्वारा बच्चों से बलात्कार के मामलों में फांसी की सजा दिए जाने का प्रावधान किए जाने के बाद हाल ही में उत्तर प्रदेश के कन्नौज में एक पुरुष ने 11 वर्षीय अपनी भतीजी के साथ बलात्कार किया। मुरादाबाद और मुजफरनगर में तीन बच्चों के साथ यौन शोषण हुआ। रामपुर में 7 साल की बच्ची को जंगल में ले जाकर बलात्कार किया गया। अमरोहा में 5 साल की बच्ची से बलात्कार हुआ। मुजफरनगर में एक चिकत्सिक ने सिरदर्द का इलाज करवाने आई 13

दुनिया बहुत कष्ट सहती है। बुरे लोगों की हिंसा के कारण नहीं, बल्कि अच्छे लोगों के मौन के कारण। –नैपोलियन

साल की बच्ची के साथ बलात्कार किया। मध्य प्रदेश के महानगर इंदौर में 20 अप्रैल 2018 को फुटपाथ पर सो रही चार महीने की बच्ची को चुपचाप उठा लिया गया। उस मासूम के साथ बलात्कार किया गया और उसका सिर पटक पटक कर उसकी हत्या कर दी गई। उस बच्ची का परिवार राजबाड़ा में गुब्बारे बेचकर जीवनयापन करता है। हकीकत ये है कि बच्चे न घर में सुरक्षित हैं और न ही खुले आसमान के नीचे। इन हालातों में भारत सरकार के मंत्री कहते हैं कि बलात्कार रोके नहीं जा सकते हैं, इन पर हो–हल्ला नहीं मचाया जाना चाहिए।

भारत में वर्ष 2001 से 2016 के बीच बच्चों के प्रति होने वाले अपराधों में 889 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इन सोलह सालों में बच्चों के प्रति अपराध 10,814 से बढ़कर 1,06,958 हो गए। इसी अवधि में दुनिया की सरकारें और विकास अभिलाषी ताकतें सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्यों (जिन्हें एमडीजी कहा जाता रहा) को हासिल करने की कोशिश कर रही थीं। भारत की राजधानी दिल्ली में ही ये अपराध वर्ष 2001 में 912 से बढ़कर वर्ष 2016 में 8,178 हो गए। कर्नाटक में ऐसे दर्ज अपराधों की संख्या 72 से बढ़कर 4,455 (6088 प्रतिशत), ओडिशा में 68 से बढ़कर 3,286 (4732 प्रतिशत), तमिलनाडु में 61 से बढ़कर 2,856 (4582 प्रतिशत), महाराष्ट्र में 1,621 से बढ़कर 14,559, उत्तर प्रदेश में 3,709 से बढ़कर 16,079 (334 प्रतिशत) और मध्य प्रदेश में 1,425 से बढ़कर 13,746 (865 प्रतिशत) हो गई। इन सोलह सालों में भारत में बच्चों के प्रति अपराध के कुल 5,95,089 मामले दर्ज हुए, सबसे ज़्यादा मामले मध्य प्रदेश (95,324–16:), उत्तर प्रदेश (88,103–15:), महाराष्ट्र (74,306–12:), दिल्ली (59,347–10:) और छत्तीसगढ़ (31,055–5.2:) मामले दर्ज हुए। बच्चे यौन हिंसा नहीं बल्कि यौनिक युद्ध का सामना कर रहे हैं। इस सदी के पहले सोलह सालों में बच्चों से बलात्कार और गंभीर यौन अपराधों की संख्या 2,113 से बढ़कर 36,022 हो गई। यह वृद्धि 1705 प्रतिशत रही। वर्ष 2001 से 2016 के बीच के सोलह वर्षों में भारत में बच्चों के बलात्कार और यौन अपराध ा के कुल 1,53,701 मामले दर्ज किए गए. जहां बच्चों से बलात्कार और गंभीर यौन उत्पीडन (पॉक्सो के तहत) सबसे ज़्यादा मामले दर्ज हुए हैं, उनमें मध्य प्रदेश (23,659–15:), उत्तर प्रदेश (22,171–14:), महाराष्ट्र (18,307–12:), छत्तीसगढ़ (9,076–6:) और दिल्ली (7,825–5:) शामिल हैं।

हाल ही में केन्द्रीय कैबिनेट ने बुधवार को बच्चों के खिलाफ अपराध से निपटने वाले पॉक्सो कानून में संशोधनों को मंजूरी दी और बच्चों के खिलाफ यौन अपराध करने वालों को मृत्युदंड देने का प्रावधान शामिल किया है। अब बाल यौन अपराध संरक्षण (पॉक्सो) कानून में संशोधन में बाल पोर्नोग्राफी पर लगाम लगाने के लिए सजा और जुर्माने का भी प्रावधान शामिल है। इन संशोधनों से बाल यौन उत्पीड़न पर अंकुश लगने की उम्मीद है क्योंकि कानून में शामिल किए गए मजबूत दंडात्मक प्रावधान निवारक का काम करेंगे। अब प्रोटेक्शन फ्रॉम सेक्शुअल ऑफेंस (पॉक्सो) एक्ट 2012 में बड़ा बदलाव कर यौन अपराध आरोपी के लिए मृत्यु दंड का प्रावधान किया गया है। मृत्युदंड की सजा के अलावा चाइल्ड पोर्नोग्राफी जैसे अपराधों के लिए जुर्माना और जेल की सजा का प्रावधान किया गया है। सरकार का मानना है कि इस तरह की सजा ही बच्चों के प्रति होने वाले अपराध में कमी ला पायेंगे। इतना ही नहीं बच्चों में होने वाले अवसाद में भी कमी देखी जा सकेगी। इस कड़ी में पॉक्सो एक्ट की धारा 2, धारा 4, धारा 5, धारा 6, धारा 9, धारा 14, धारा 15, धारा 34, धारा 42, और धारा 45 में भी संशोधन किया गया है। इसके अलावा धारा 4, धारा 5, धारा 6 में कुछ ऐसे बदलाव किए गए हैं जिसमें इस तरह के अपराधों पर तत्काल और मृत्युदंड जैसी कड़ी सजा दी जाएगी। इसके अलावा पॉक्सो एक्ट के धारा 9 में भी बड़े बदलाव किए गए हैं। इसमें प्रा.तिक आपदा के दौरान बच्चों के साथ यौन अपराध जैसे मामले आते हैं। एसी स्थिति में रह रहे बच्चों को केमिकल पदार्थ देकर उनके साथ यौन अपराध को अंजाम दिया जाता है।

सुप्रीम कोर्ट ने देश में बच्चों के साथ बढ़ते बलात्कार के मामलों पर स्वतः संज्ञान लेते हुए इस बारे में दिशानिर्देश तैयार करने का नर्णिय लिया है। सीजेआई की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि यह चौंकाने वाला है कि इस साल अब तक दर्ज 24 हजार से अधिक मामलों में से सिर्फ 6,449 मामलों में सुनवाई शुरू की है। सुप्रीम कोर्ट ने देश में बढ़ रहे बच्चों के बलात्कार के मामलों पर शुक्रवार को स्वतः संज्ञान लेते हुए इससे निपटने के लिए दिशानिर्देश तैयार करने का फैसला कर चुकी है। चीफ जस्टिस रंजन गोगोई, जस्टिस दीपक गुप्ता और अनिरुद्ध बोस की पीठ ने कहा कि इस साल एक जनवरी से 30 जून के बीच देशभर में बच्चों के बलात्कार के मामले में 24,212 एफआईआर दर्ज हुई है। पीठ ने कहा कि इनमें से 11,981 मामलों की जांच की जा रही है और 12,231 मामलों में चार्जशीट दायर की गई है। पीठ ने कहा कि सिर्फ 6,449 मामलों में सुनवाई शुरू हुई है। यह काफी चौंकाने वाला है कि बाकी मामलों में अभी तक सुनवाई क्यों नहीं शुरू हुई।

पीठ का कहना है कि निचली अदालतों ने अब तक सिर्फ 911 मामलों पर फैसला लिया है, जो कुल दर्ज मामलों का लगभग चार फीसदी है। अदालत ने वरिष्ठ अधिवक्ता वी गिरी से इस मामले में एमक्सि क्यूरी (न्यायमित्र) के तौर पर सहयोग करने को कहा है और उन्हें यह सुझाव देने को कहा कि इन मामलों के जल्द निपटारे के लिए क्या किया जा सकता है। पीठ ने गिरी से कहा, इनकी कमियों की तरफ देखें। अदालत ने कहा कि इन मामलों में अदालत के समक्ष पेश किए गए राज्यवार ब्योरे और सामूहिक आंकड़े गिरी को उपलब्ध कराए जाएं। इस मामले की अगली सुनवाई 15 जुलाई को निर्धारित की गई है।

इन सबके अलावा समाज को भी अपराधों पर चिंतन की जरूरत है। समाज में अपराध बढ़ रहे हैं। इसे लेकर हर कोई चिंता जताता है। पर जब बात अपराध को रोकने की आती है, तो अजीब दोहरा व्यवहार उभर कर सामने आता है। ऐसी अनेक घटनाएं प्रमाण हैं, जिनमें आरोपियों के बचाव में स्थानीय लोग सड़कों पर उतर आए। इस तरह अपराध को उकसावा या बढ़ावा मिलता है। इसका असर बच्चों और किशोरों पर भी साफ दिखने लगा है। लिहाजा समाज में संवेदना का क्षरण और अपराधी के प्रति नरम रवैया ज्यादा चिंता का विषय है। बढ़ते अपराधों से कांपता समाज और कुछ न कर पाने की स्थिति में हम! एक समय में झूठ बोलना भी अपराध माना जाता था, मगर अब झूठ कितनी चतुराई से बोला गया कि सच और झूठ में फर्क करना मुश्किल हो गया और कभी पकड़ा नहीं जा सका, इस बात पर लोग गौरव महसूस करते हैं। हर झूठ बोलने वाला यह भी कहता है कि वह कभी झूठ नहीं बोलता। इन दिनों टीवी बहसों या आम बातचीत में अक्सर चिंता प्रकट की जाती है कि अपराध बढ़ते जा रहे हैं। मगर अपराधी क्या कहीं बाहर से आते हैं। हम और आप में से ही होते हैं। और अपने घर का अपराधी कभी अपराधी नजर नहीं आता। अपना घर तो छोड़िए, अपने मोहल्ले, गांव या कस्बे के अपराधी के पकड़े जाने पर लोग उसे बचाने निकल पड़ते हैं। मारपीट और हमला बोलते हैं। हत्याएं तक हो जाती हैं। यहां तक कि पकड़ने गई पुलिस पर भी टूट पड़ते हैं। क्या ऐसी स्थिति में अपराध रोके जा सकते है? विशेषकर महिलाओं और बच्चों के खिलाफ अपराध रोकने में जितनी भूमिका तंत्र निभा सकता है उससे बडी भूमिका समाज की भी है। हम सबको जागरूक होकर एक सुरक्षित समाज का निर्माण करना ही होगा नहीं तो हर तरक्की बेमानी है।

गेहूं को छोड़ गोला-बारूद भर पाक में घुस गए थे कंवल नैन

– रवींद्र राठी

दो देशों के बीच युद्ध में आखिर एक सिविलियन कितनी बहादुरी दिखा सकता है, उसका जीता–जागता प्रमाण कंवल नैन हैं। इसलिए तो 15 अगस्त 1966 को लालकिले की प्राचीर से भी कंवल के शौर्य का बखान हुआ था। तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने उन्हें अशोक चक्र से सम्मानित किया था। सोनीपत के कंवल नैन फिलहाल राजस्थान के जयपुर में रहते हैं और आज भी अपने अधिकार के लिए कभी प्रधानमंत्री कार्यालय तो कभी राष्ट्रपति भवन तो कभी मंत्रियों के दफ्तरों की खाक छान रहे हैं। जी हां, पाकिस्तान के साथ वर्ष 1965 में हुए युद्ध में भारतीय सेना के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लड़ते हुए अदम्य साहस का प्रदर्शन करने वाले सोनीपत निवासी ट्रक ड्राइवर कंवल नैन को भारत सरकार अशोक चक्र देकर भूल गई है। बता दें कि 30 अगस्त 1965 को कंवल नैन पंजाब के मलेरकोटला से अपने ट्रक में 90 बोरी गेहूं लादकर दिल्ली जा रहे थे। सेना के जवानों ने उनके ट्रक को रोका और बताया कि पाकिस्तान से युद्ध छिड़ गया है। हमें ट्रक और आपकी मदद की जरूरत है। इतना सुनते ही कंवल ने ट्रक में लदी गेहूं सड़क पर उतार दीं और ट्रक में गोला–बारूद भरकर सेना की सहायता में जुट गए थे। आज भी पूरे जोश के साथ उस दिन को याद करते हुए कंवल बताते हैं कि युद्ध करते हुए वे पाकिस्तान के सियालकोट सेक्टर तक पहुंच गए थे। वहां चारों ओर गोला–बारी के बीच से भारतीय सेना की रसद लेकर आगे बढ़ते रहे। पाकिस्तान की सीमा में घुसकर कंवल ने जिस शौर्य का उदाहरण दिया, उसे देखकर भारतीय सेना के जवान भी दंग रह गए थे। भारत सरकार ने इस यादगार लड़ाई के लिए उन्हें अशोक चक्र से तो सम्मानित किया, लेकिन इसके साथ मिलने वाली सुविधाएं 54 साल बाद भी नहीं मिलीं। उनकी रोजी–रोटी का एकमात्र साधन ट्रक उस लड़ाई में खत्म हो गया था, लेकिन एक फूटी कौड़ी भी क्षतिपूर्ति के लिए नहीं मिली। हालांकि सरकार द्वारा अशोक चक्र के कारण 15 रुपये देने शुरू किए थे, जो अब 6 हजार रुपये हो गए हैं। वर्तमान में उनकी पत्नी बीमार है, मात्र 6 हजार रुपये महीने में घर का गुजारा नहीं होता तो फिर बीमार पत्नी का इलाज कैसे संभव हो। कंवल के अनुसार उन्हें

विचार का चिराग बुझ जाने पर आचार अंधा हो जाता है। –बिनोवा भावे

कोई चंदा या खैरात नहीं चाहिए, उन्हें केवल अपना हक चाहिए।

किसी ने नहीं निभाया वादा–राजस्थान सरकार ने वर्ष 2016 में लिखित जवाब दिया कि नैन हरियाणा (तत्कालीन पंजाब) के मूल निवासी हैं। राजस्थान सरकार द्वारा केवल अपने मूल निवासियों को ही सुविधा दी जा रही है। वह कंवल नैन को यह सुविधाएं नहीं दे सकती। हालांकि हरियाणा के तत्कालीन सीएम भूपेंद्र हुड्डा ने वर्ष 2006 में घोषणा तो की, लेकिन मिला कुछ नहीं। मंत्रियों, अधिकारियों व नेताओं से गुहार लगा चुके कंवल के अनुसार न्याय दिलाने के वादे तो कई लोगों ने किए, लेकिन निभा कोई नहीं पाया।

अपनों ने ही परास्त किया– बता दें कि अशोक चक्र वीरता सम्मान है। यह युद्ध के अतिरिक्त शौर्य, बहादुरी और बलिदान के लिए दिया जाता है। इसे पाने के बाद भी एक 85 साल का आदमी पैदल रक्षा मंत्रालय, गृह मंत्रालय और पीएमओ के चक्कर काट रहा है और उसे उसका हक देने की जगह धक्के दिए जा रहे हैं। उम्र के लभगभग अंतिम पड़ाव में भी पाकिस्तान जैसे दुश्मनों को लेकर कड़े तेवर रखने वाले कंवल नैन के अनुसार जिस व्यक्ति ने पाकिस्तान की तोप के सामने भी हिम्मत नहीं हारी, उसे अपनी ही सरकार और व्यवस्था ने परास्त कर दिया।

आजादी के लिए सबकुछ न्यौछावर करने वाले एक बागी शहजादे की कहानी

– डॉ. केसी यादव, विख्यात इतिहासकार

आजादी के आंदोलन में एक बागी शहजादे की कहानी से करीबन हर हरियाणवी अनजान है। उस बागी शहजादे का नाम था मुहम्मद आजिम बेग। वह हिसार में रहता था और दिल्ली के शाही मुगल सम्राटों से उसका संबंध था लेकिन अब जिस समय का जिक्र किया जा रहा है वह समय था ईस्ट इंडिया कंपनी का। ईस्ट इंडिया कंपनी में ही शहजादा मुहम्मद आजिम बेग नौकरी करता था। भट्टू के स्थान पर कस्टम विभाग का दफ्तर था और वहां आजिम सहायक पैट्रोल की हैसियत से कार्यरत था।

अंग्रेजी कस्टम विभाग लोगों पर टैक्स की चोरी या माल की, खासकर नमक की, जोकि लाचार और गरीब लोग कर लेते थे को रोकने की जिम्मेदारी थी। कस्टम चौकियां भयंकर अत्याचार के अड्डे होती थी। मामूली नमक लाने ले जाने वाले गरीब लोगों से वहां पाश्विक व्यवहार होता था। यह सब देख देखकर आजिम बेग का मन भर गया था और वह मन ही मन बागी हो गया था।

10 मई 1857 को अंग्रेजों के खिलाफ महा विद्रोह फूट पडने पर शहजादे आजिम बेग ने भी बागवत का झंडा पकड लिया। देखते ही देखते हिसार क्षेत्र में हजारों लोग उस झंडे के नीचे आ खडे हुए। वे आगे बढे, एक एक करके सारे क्षेत्र से गुलामी के दाग मिटाते हुए। बादशाह बहादुरशाह ने जब ये सुना तो बहुत खुश हुए और उन्हें न केवल आशीर्वाद दिया बल्कि अपनी तरफ से इलाके को प्रशासित करने का भी अधिकार दे दिया।

शहजादा नियाहत योग्य था। अत उसने बुरे दिनों में भी इस क्षेत्र से सही प्रशासित किया और जून 1857 तक यह स्थिति बनी रही। इसके बाद बदलाव आया और जून के दूसरे सप्ताह में पंजाब की तरफ से आक्रमण हो गया। फिरोजपुर का डिप्टी गर्वनर जनरल वान कोर्टलैंड एक सशक्त होने के कारण शहजादे पर टूट पडा। बागी शहजादा इस हमले के लिए पहले से ही तैयार था, अत उसने बूढे जनरल का हिसार में मुकाबला किया। जमकर युद्ध हुआ लेकिन सैनिकों के भारीपन के चलते अंग्रेज जीत गए। शहजादा वहां से हट गया। जनरल कोर्टलैंड उसे पकडने में असफल रहा लेकिन उसकी बेगम को पकड लिया। शहजादे को आत्मसमर्पण के लिए कहा गया लेकिन उसने इंकार करते हुए कहा कि वो और उसका परिवार एक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सर्वोच्च बलिदान देने के लिए तैयार है। वहां से शहजादा हांसी चला गया।

हांसी में फिर उसका मुकाबला बूढे जनरल से हुआ। शहजादा गजब की फुर्ती के साथ वहां से भी हट गया और फौरन हिसार पर हमला कर दिया। वहां का अंग्रेजी कमांडर डर के मारे भाग गया। कोर्टलैंड ने शहजादे को वहां से हटाने के लिए कप्तान माईल्डवे को भेजा, जिसे शहजादे ने बुरी तरह पीटकर भगा दिया। इस पर जनरल स्वयं वहां पहुंचा। खूब लडाई हुई लेकिन शहजादा हार गया। इसके बावजूद वह झुका नहीं और तोशाम की तरफ निकल गया। वहां उसने 25 सितंबर को अंग्रेजों के समर्थकों

दुनिया का अस्तित्व शस्त्र बल पर नहीं, सत्य, दया और आत्मबल पर है। –महात्मा गांधी

को बुरी तरह पीटा। तहसीलदार नंदलाल, थानेदार प्यारेलाल आदि को मौत के घाट उतार दिया। अंग्रेज भक्त व्यापारियों को लूट लिया। इलाके के लोग भी उससे आकर मिल गए। इससे शहजादे की हिम्मत बढी और उसने कोर्टलैंड पर आक्रमण बोल दिया। यहां भी विजय कोर्टलैंड के ही हिस्से आई। शहजादा पीछे मुडा और रोहनात गांव में मोर्चा लगा दिया। कोर्टलैंड वहां भी पहुंचा और फिर युद्ध हुआ। युद्ध क्या था, भयंकर ही रहा। सैकडों लोग मारे गए और किस्मत यहां भी शहजादे के हक में नहीं रही। शहजादा पीछे सरकार और मंगल गांव में आकर फिर से लडा। यहां भी सौ से ज्यादा बागी शहीद हुए लेकिन कोर्टलैंड ही जीता।

इसके बाद भी शहजादे जैसे हिम्मत नहीं हारने के लिए ही बना था। अक्टूबर के पहले हफते में हिसार छोड दिया। वह नारनौल पहुंचा जहां राव तुलाराम और जोधपुर का बागी दस्ता पहले ही मौजूद थे। तीनों मिलकर तेरह हो गए और 16 नवंबर 1857 को नारनौल के समीप नसीबपुर गांव में अंग्रेजी सेना से वो टक्कर ली जो आज भी इतिहास के दस्तावेजों में दर्ज है। हजारों लोग शहीद हुए और इन्हीं शहीदों में शामिल थे शहजादा और उनका पुत्र। शहजादे की पत्नी को अंग्रेजों ने लाहौर की एक पुरानी हवेली में नजरबंद कर दिया और कई वर्षो की गुमनामी के बाद वो दुनिया ए फानी से कूच कर गईं। जिस आजादी का हम जश्न मना रहे हैं, उसमें शहजादे बेग और उनके परिवार का भी योगदान रहा है।

दूध बेचकर पिता ने भरा था फॉर्म, अब बेटी नासा में करेगी कोर्स, कल्पना चावला है रोल मॉडल

करनाल की शीतल चौधरी नासा में करेंगी कोर्स

– धर्मेंद्र कंवारी,

हरियाणा (रिकबाराम बोला)। करनाल के गांव बस्तली निवासी शीतल चौधरी शनिवार को अमेरिका पहुंच जाएगी। वह नासा में शुरू होने वाले यूनाइटेड स्पेस स्कूल–2019 में हिस्सा लेगी। एफआईएसई की ओर से पांच अगस्त तक लगने वाले इस विशेष स्कूल में विभिन्न देशों के विद्यार्थी हिस्सा लेंगे, जिसमें हरियाणा से शीतल अकेली छात्रा है।

गांव में दूध बेचकर परिवार का गुजारा करने वाले पिता ताराचंद ने दैनिक खर्च से बचत कर बेटी शीतल का इसके लिए आवेदन फार्म भरा था। इसके बाद तीन स्तरीय टेस्ट की प्रक्रिया को पास करके शीतल का चयन यूनाइटेड स्पेस स्कूल के लिए हुआ है। शीतल ने बताया कि देश के लिए नासा में काम करना उसका सपना है। यहीं से वह अपने सपने को पूरा करने का रास्ता बनाएगी। ताकि पता चले इसरो को कितने बजट की जरूरत शीतल का कहना है कि 15 दिन तक चलने वाले इस स्कूल में विद्यार्थियों को छह अलग–अलग टीमों में उनकी रुचि के अनुसार बांटा जाएगा। अलग–अलग मिशन पर विद्यार्थी कार्य करेंगे। ट्रेनिंग के दौरान नासा व कई सेंटरों में विद्यार्थियों को विजिट भी कराया जाएगा। वह येलो टीम का हिस्सा बनना चाहेगी, क्योंकि इसमें एरोनोटिकल साइंस के बजट से संबंधित जानकारियां और ट्रेनिंग दी जाती है।

कल्पना की कहानियों ने किया प्रेरित, वही मेरी रोल मॉडल

शीतल ने बताया कि केंद्र सरकार अभी इसरो को पूरा बजट तय नहीं कर पाती। मैं इस पर ट्रेनिंग कर जानूंगी कि इसरो को कितने बजट की जरूरत है, ताकि अलग–अलग मिशनों पर काम ठीक ढंग से हो सके। शीतल करनाल के टैगोर बाल निकेतन सीनियर सेकेंडरी स्कूल की 11वीं कक्षा की छात्रा है। इसी स्कूल से अंतरिक्ष परी कल्पना चावला ने भी पढ़ाई की। शीतल ने बताया कि कल्पना के स्कूल में होने से और उनके किस्से कहानियों ने उसे इसके लिए प्रेरित किया। कल्पना चावला को वह अपना रोल मॉडल मानती हैं।

किराए के मकान में रहते हैं माता–पिता

शीतल के पिता ताराचंद और मां नीलम बेटी की उपलब्धि पर काफी खुश हैं। तारा चंद बस्तली गांव में छोटी सी दुकान पर दूध इकट्ठा कर कमीशन पर बेचते हैं। इस काम से करीब 15 हजार रुपये की आमदनी से वह परिवार का खर्च चलाते हैं। शीतल और उसके छोटे भाई की पढ़ाई के लिए वे करनाल के सेक्टर छह में किराए के मकान में रहते हैं।

दो हजार खर्च करते हुए डर रही थी–मां

शीतल की मां नीलम ने बताया कि नवंबर 2018 में शीतल ने नासा के इस स्कूल के लिए ऑनलाइन आवेदन किया था। उस समय आवेदन के लिए दो हजार रुपये की फीस के पैसे उनके पास नहीं थे। घर के खर्च में से कटौती करके पैसे जुटाए थे और फार्म भरा था। दो हजार रुपये खर्च करने से डर भी रही थी।

पहुँची खाक वहीं पै, जहाँ खमीर था

– डॉ0 धर्मचन्द्र विद्यालंकार

आज हमें अपना पिछली एक–डेढ़ शताब्दी का राष्ट्रीय संघर्ष बेकार ही लग रहा है। कहाँ पर वह नवजागरण की नव बेला थी। जबकि हम समाज के रूढ़ि–रोधें को तोड रहे थे तो बर्बर परम्पराओं से मुख मोड रहे थे। सती–प्रथा जैसी क्रूर व्यवस्था के विकार से बच रहे थे। बाल–विवाहों को विधिसम्मत् ढंग से बंद करा रहे थे। इतना ही नहीं, नारी–शिक्षा का शंखनाद करके नवयुग का सूत्रापात कर रहे थे। अंग्रेजी राज्य की दासता का ही सही यह पुण्य प्रताप था कि हम जाँत–पाँत की सुदीर्घ श्रृंखलाओं को शिथिल कर रहे थे। और तो क्या, प्रथम स्वतन्त्राता–संग्राम हमने हिन्दू–मुस्लिम के भेदभाव से ऊपर उठकर एक जातीयता और सांझी राष्ट्रीयता के बलबूते पर ही तो लड़ा था।

19वीं सदी से लेकर बींसवी शताब्दी तक पूरी की पूरी सुधारों का ही तो समय था। जिस काल में चाहे पश्चिमी शिक्षा–दीक्षा के प्रबल प्रभाव से ही क्यों न सही, हमारे अपने समाज; हिन्दू समाजद्ध में ही एक से बढकर एक समाज–सुधारक और क्रान्ति–चेता पुरुष जन्म ले रहे थे। राजा राममोहन राय से लेकर स्वामी दयानन्द सरस्वती से पं० ईश्वर चन्द विद्यासागर से केशवचन्द सेन से लेकर महादेव गोबिन्द रानाडे तक एक लम्बी कतार थी। जोकि समाज–परिवर्तन और सुधार में प्रयत्नरत थी। जबकि अन्धस्था का स्थान वैज्ञानिक तर्क बुद्धि ले रही थी और धर्मशास्त्रीय संहिताओं का स्थान हमारी संवैधनिक संहिताएँ ले रही थीं। जिसमें समता और स्वतन्त्रता थी। मुस्लिम और ईसाई समाज भी आत्मचेता और आत्म–सजग बन ही रहे थे।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के चार–पाँच दशक पर्यन्त या कहिए कि हम पूरी बीसवीं शताब्दी तक भी आधुनिक बन ही रहे थे। जाँत–पाँत का भेदभाव कम हो रहा था। धार्मिक कट्टरता घट रही थी और सहिष्णुता बढ़ रही थी। केवल भारत–विभाजन के समय एकाएक फूटने वाले साम्प्रदायिक दंगों के दावानल के और कोई ऐसा अश्वेत उदाहरण हमें उस काल में नहीं मिलता है। महात्मा–गांधी और पं० जवाहरलाल नेहरू के वैचारिक नेतृत्व में हम भारतवासी उदार और आधुनिक एवं तर्कशील नागरिक बन रहे थे। हम सहअस्तित्व की ओर अग्रसर थे, एवं जातीय राष्ट्र–निर्माण के लिए अत्यन्त उत्सुक भी थे। क्योंकि धर्म और सम्प्रदाय की बजाय हम दलगत विचारधाराओं के आधार पर ही तो मतदान किया करते थे। दरिद्रता का उन्मूलन और आत्मनिर्भरता हमारे राष्ट्रीय संकल्पशील स्वप्न थे। इसीलिए बैंकों का राष्ट्रीयकरण और जमींदारीप्रथा की समाप्ति जैसे क्रांतिकारी सुधार सम्पन्न हो सके थे।

हरित–क्रांति के कारण हम अन्नोत्पादन अथवा खाद्यान्नों में स्वावलम्बी और आत्मनिर्भर बने थे तो श्वेत–क्रांति से हम दुग्धोत्पादन में समृद्ध हुए थे। यह नेहरू जी की आधुनिकता सम्पन्न अग्रगामी दिव्यदृष्टि ही थी कि उन्होंने भाखडा–नांगल डैम का उद्घाटन करते समय उसी को 'भारत–माता का भावी मंदिर' बताया था। फलतः हम धर्मिक रूढिवाद से ऊपर उठकर आधुनिक और एक उदार एवं गतिशील राष्ट्र बनने की ओर आगे बढ़ रहे थे। हम अपने काले और कटु अतीत का विस्मरण ही तो कर रहे थे।

नव्वे के दशक के बाद जो नव उदारवाद किया वैश्वीकरण के नये नारे के साथ जो बाजारवादी नयी–नयी अर्थनीतियाँ आयी थीं। वे भी हमें भूगोलीकरण का दिवास्वप्न दिखाकर विश्व–नागरिक या आधुनिक बना रही थी। बल्कि निजीकरण और उदारीकरण के नाम पर धनी देशों को निर्धन देशों की मण्डियाँ या बाजारों में खुली लूट की ही छूट मिल गई थी। इसलिए अब तो शिक्षा, रक्षा और चिकित्सा तक निजी होने लगे थे और सरकारों ने भी अपना पल्ला सारे समाज कल्याणकारी कार्यक्रमों से झाड़ लिया था। विदेशी कम्पनियों को भारतीय बाजारों में खुली लूट की छूट दे दी थी। भारतीय कम्पनियाँ टुटपूंजियाँ होने के कारण 'मत्स्य–न्याय' के चलते विशाल बहुराष्ट्रीय निगमों के अगाध उदर में समा गईं थी।

एक ओर जहाँ पर वैश्वीकरण या भौगोलिकीकरण का नव्य नारा था, वहीं पर भारत में 'रामंदिर–मुक्ति' के नाम से साम्प्रदायिक राजनीति ने अपना फन फुपफकारा था। जो राजनीति पहले कभी उत्पादन में वृद्धि और रोजगार परकता के अनुपात को लेकर नेहरू और लोहिया या फिर श्रीमती इन्दिरा गाँधी और चौ० चरणसिहं जैसे किसान मसीहा जैसे महान राष्ट्रीय नेताओं के मध्य में अस्सी के दशकों तक हुआ करती थी। अब उस अर्थोन्मुखी जन नीति का स्थान सवर्ण साम्प्रदायिकता ने ग्रहण कर लिया था। कहने का भाव यह है कि जिस शहरी सवर्ण स्वामियों पर भारतीय समाज को शिक्षित एवं आधुनिक बनाने का उर्ध्वगामी उत्तरदायित्व था, वही 'उल्टे बाँस बरेली' को भेज रहे थे। यह कैसी विचित्र विड़म्बना है।

एक दक्षिणवपंथी और घोर साम्प्रदायिक राजनीति ने इतिहास के अतल कूप से एक जिन्न को भूतल पर ला दिया था। जिसने भारतीय राजनीति को बजाय बाजारवादी नीतियों की लूट के विरूद्ध लडने के लोगों को आपस में ही लड़ा दिया था। अब आर्थिक विषमता या गैर बराबरी के विरूद्ध संघर्ष हमारा राजनीतिक कार्यक्रम अथवा उद्देश्य कहाँ रह गया था। एक ओर 'मण्ड़ल–कमीशन' ने जहाँ पर सदियों से पिछडे और वंचित किसानों और कामगारों को शक्ति–संरचना में साँझेदारी

देने का आह्वान किया था तो दूसरी ओर शहरी सम्भ्रान्त एवं सवर्ण स्वामियों ने 'राम–मन्दिर' का कमण्ड़ल उठा लिया था। इस प्रकार से मण्ड़ल और कमण्ड़ल के संघर्ष में ही सारी राजनीति उलझकर रह गई थी, जाल में फंसी हुई मछली की भांति या फिर झाडियों के झुरमुट में उलझे हुए बारहसिंगा की भाँति।

अब–जब भी अपने देश में कोई भी समता और स्वतंत्राता की लहर उठती है। तभी उसके विरूद्ध एक प्रतिगामी एवं प्रतिक्रांति की चेतना भी क्यों उद्‌बुद्ध हो उठती है। श्रमण–संस्कृति की वर्ग–व्यवस्था के विरूद्ध आवाज को महाकाव्य और पौराणिक काल में विसर्जित कर दिया गया था। जबकि श्रमण संस्कृति समाज में समता का ही तो शंखनाद कर रही थी। लेकिन नवीन ब्राह्मण र्धमाचार्यों किवां हिन्दू धर्म–ध्वजियों ने उसको नास्तिक और वेदनिन्दक ठहराकर सांस्कृतिक संघर्ष में ध्वस्त कर दिया था। बौद्ध मठ मंदिरों में नवोदित राजपुत्रो राजसत्ता का सबल सहाय पाकर परिवर्तित कर दिये गये थे। बंगाल के शासक और दक्षिण के राजा सुधनवा की सेनाओं ने बौद्धों का धर्मध्वंस करके ही हिन्दू धर्म की ध्वल ध्वजा फहराई थी।

इसी प्रकार से जब भक्ति–काल में निर्गुणियों साधु–संतों ने ब्राह्मणी वर्ण–व्यवस्था के विरूद्ध धर्मिक क्षेत्रा में सामाजिक समानता की मांग उठाई थी तो वहां पर भी ब्राह्मण–भक्त–कवियों ने उस समतामूलक विचार वारि–धरा के अविरल और अप्रतिहत प्रबल प्रवाह को सगुण उपासना और भक्ति की ओर मोडकर एक बार पुनः उसी अवतारवाद और पाषाण प्रतिमा–पूजन के पाखण्ड़वाद की ओर उन्मुख कर दिया था। ऐसा क्या आकरण नहीं है कि हिन्दू धर्म और वर्ण–विन्यास के संरक्षण ये दोनों ही धर्मधुरन्धर तथागत बुद्ध और वर्धमान जैन–धर्म तीर्थंकर महावीर की भाँति राजकुल जन्मा क्षत्रिय कुल–भूषण ही है। अतएव बुद्ध और महाबीर की ब्राह्मणवाद विरोधी विचार वायु को कुन्द करने के लिए ही रामायण और महाभारत अथवा गीता–माता का सृजन और गायन किया गया है। जिसमें उसी विषमतामूलक और क्रमिक असमानता की ही वकालत की गई है और ब्राह्मण वर्ण की सर्वश्रेष्ठता वहाँ पर स्वयं सिद्ध ही है। जबकि शूद्र–श्रमिक पशुतुल्य ही तो माने गये हैं। तुलसी का यह वाक्य यहाँ स्मरणीय है। ''वादि शूद्र द्विजन सौ, हम तुम ते कछु वाढ़ि।''

स्वतंत्रता–प्राप्ति के पश्चात आधुनिक शिक्षा–दीक्षा के कारण जो समानता और स्वतंत्रता की भव्य भावना भारतीय समाज में जन्म ले रही थी। दक्षिणपंथी राजनीति ने समय रथ के पहिये को एक बार आज फिर उसी अन्धे अतीत की ओर उन्मुख और अग्रसर कर दिया है। अब एक बार फिर साम्प्रदायिकता का अजगर अपना फन फुंफकार रहा है। समाज में अब अनेकता का भाव हमें रह–रहकर ललकार रहा है। धार्मिक अन्धस्था आज एक बार फिर से सरसरा उठी है। वैज्ञानिक तर्कशीलता तिरोहित हो रही है। विवेक का स्थान आज एक बार फिर से कोरा अन्धविश्वास ले रहा है। हम अब बजाय भावी के उज्जवल क्षितिज के एक बार फिर अतीत के अन्धकूप की ओर अनुदिन अग्रसर क्यों हो रहे हैं?

आजकल हमारे पोंगा–पुंगव सत्ताधीश सत्तापीठों पर बैठकर भी अर्हनिश अर्नगल प्रलाप क्यों कर रहे हैं। कोई किसी प्रान्त का प्रधान अतीत में अर्न्तजाल की साक्षी दे रहा है तो दूसरा उप प्रधान सीता को टेस्ट–ट्यूब की ही प्रथम सृष्ट संतति बखान रहा है। एक वुडबक पुरातन पंथी राजनेता गणेश के सिर जो गजानन की कलम पुराणों में कल्पित की गई है। उसी पुरा दन्तकथा को ही वैज्ञानिक शोध और सन्धन मानकर संतुष्ट है। एक पौंगा–पण्ड़ित ने तो अहमदाबाद में सम्पन्न होने वाले विश्वस्तरीय वैज्ञानिक सम्मेलन में भारद्वाज ऋषि के विमान–शास्त्र से साक्ष्य देकर सर्वप्रथम भारतवर्ष में ही विमानों के व्योम–विहार की आत्ममुग्ध भाव से चर्चा की थी। जबकि वह ग्रन्थ 1904 ईस्वी में एक दक्षिण के पण्ड़ित द्वारा भारद्वाज नामक वैदिक ऋषि के नाम से संस्कृत भाषा में रचित है। अतएव भारतीय वैज्ञानिकों की बडी छिछालेदार हुई थी।

यहाँ पर यह कहना असंगत नहीं होगा कि हमारे मिथ्या धर्मध्वजी पोंगा–पण्ड़ितों के पास बाल्मीकि, व्यास, मनु और चाणकय एवं भारद्वाज पाराशर तथा नारद जैसे आप्त मान्य ऋषियों के नामों की मुद्राएँ; मोहरें, सुरक्षित और संचित हैं। उनके नामों का उपयोग करके वे पूर्वदीप्ति अथवा फ्रलैश–बैक के माध्यम से वर्तमान–काल की किसी भी उपलब्धि को भूतकाल में दिखा सकते हैं। वरना, नारद और पाराशर और बृहस्पति तथा याज्ञवल्क्य तथा भृगुंसंहिताएँ या स्मृतियाँ जो रची गई हैं। वे मौर्योत्तर काल से लेकर गुप्तकाल से मध्यपूर्व काल पर्यन्त की समय–सीमा की ही तो सृष्टियाँ हैं।

आप ही बताईये कि जिन लोगों ने कभी पतंग भी उत्तूंग आकाश में न उड़ाई हो, भला क्या वे विमानों से व्योम–विहार करते। जिस भारद्वाज ऋषि निर्मित पुष्पक–विमान की चर्चा हमारे धर्मधुरन्धर गर्वस्पफीत होकर करते हैं। यदि वह मनोजब अथवा मनोगति से ही उडान भरने वाला था तो फिर श्रीलंका से अयोध्या तक की कुल चार सौ कोस की दूरी को मापने में उसे बीसियों दिन क्यों लगे थे।

प्रथम स्वतंत्राता संग्राम क्या भक्ति–काल से लेकर जो एक साँझी जातीयता किवां राष्ट्रीयता का विपुल विकास भारत में हो रहा था। वह आज एक बार पुनः अवरुद्ध क्यों हो गया है। हमारे लिए महदाश्चर्य का विस्मयजनक विषय तो यह है कि वर्तमान के जिन सत्तारूढ़ राष्ट्र–वीरों ने स्वाधीनता सुदीर्घ संघर्ष में अपना किचित भी योगदान नहीं किया था। वही धर्मवीर न जाने क्यों आजकल बलिदानी वीर बने बैठे हैं। हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही समुदायों के देशभक्त जब भारत–माता की दासता की जंजीरों को काटने के लिए जेल की यन्त्राणाएँ भुगत

रहे थे और तो क्या वे प्राणोत्सर्ग तक के लिए तैयार थे। तभी तो राष्ट्रकवि दिनकर जी ने उन राष्ट्र बलिदानी वीरों के लिए ये स्वर्ण–सज्जित पंक्तियाँ रची थी–

''कलम आज उनकी जय बोल,
जो चढ गये काल वेदी पर, बिना किए गर्दन का मोल।''

तब हमारे आज के ये तथाकथित राष्ट्रवीर धर्मधुरीण बजाय जातीय और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ करने के धार्मिक भेदभाव को उग्रता के साथ उभार कर वे उसे और खंड–खंड ही तो कर रहे थे। यदि हम इसी बात को प्रकारान्तर से यह कहें कि वे बजाय राष्ट्र–सेवा के देशद्रोह का ही कुकृत्य कर रहे थे तो यह अतिश्योक्ति नहीं होगी। आजकल इन्हीं विषधरों व्यालों ने सत्ताशीर्ष पर शेषनाग की भाँति सत्तासीन होकर अपना विष–विगरण करना आरंभ कर दिया है। अब तो हमारे संवैधनिक सत्ता–संस्थान भी धर्मिक विद्वेष से क्यों नहीं बचे हुए हैं। अब तो उनमें भी साम्प्रदायिक भेदभाव का विष व्याप्त हो गया है। प्रत्येक क्षेत्र या संस्था को हम अब हिन्दू और मुस्लिम की दृष्टि से ही क्यों देखने लगे हैं। अल्पसंख्यकों को पूर्णतया राष्ट्रद्रोही मानना क्या किसी देशद्रोह से कम है क्या। सारे के सारे हिन्दुओं को ही देशभक्ति का परम प्रमाण वितरण यह प्रामाणिकता और पक्षपातहीनता है। ऐसा लगता ही नहीं है अब कि हम सभी एक ही भारत–राष्ट्र के अभिन्न अंगभूत अवयव है।

यहाँ पर यह कहना असंगत नहीं होगा कि स्वतन्त्रता पूर्वकाल में जिस नवोदय के कारण जो नवजागरण आधुनिक युग में हुआ था। आज नवजागरण पुनरोत्थान का ही अपावन प्रतीक क्यों बन गया है। यदि सभी कुछ भारतवर्ष में ही ज्ञान–विज्ञान था तो हमारे राष्ट्रीय नव नायक विदेशी धरती; बिट्रेन में ही क्यों विद्यार्जन के लिए गये थे। हमारी परम्परागत शिक्षा–प्रणाली केवल कर्मकांड़परक ही थी। अधिक से अधिक वह आत्मज्ञान सम्पन्न ही थी। लेकिन भौतिक ज्ञान–विज्ञान से वह सर्वथा विपन्न ही थी। जिस दिव्य देश में कर्मिणों किंवा कर्मवीरों को ही कमीन मान लिया गया हो, क्या वहाँ पर कभी भूलकर भी उद्योग–धंधें और कृषि एवं व्यापार का विपुल विकास–विस्तार होता। हमारे पोंगापण्ड़ित परम्परा प्रवीण धर्मधुरन्धरों ने वैद्यों तक को शूद्र संवर्ग में पटक दिया था। भला तब क्या यहाँ पर जीवक चरक और धन्वतरि या लुकमान जैसे जीवनदायक वैद्यराज यहाँ जन्म लेते, कदापि नहीं।

इसी प्रकार से भौतिक वैज्ञानिक विकास करने वाले नल–नील और मय जैसे महामुनीषियों को ही तो पुराण–साहित्य में मायावी और राक्षस क्यों बताया गया है? जो लोग हमारे लिए विज्ञान दीप से अज्ञानधकार का उन्मूलन करके उज्जवल आलोक बिखेर रहे थे, वही मायावी और दैत्य तथा असुर थे। और जो धर्मिक पंडे–पुजारी भूतल पर बैठकर स्वर्ग और मोक्ष के मुक्ति–पत्रा बाँट रहे थे। वही यहाँ पर विप्रदेव ब्राह्मण, द्विजदेव और भूसुर क्यों बने बैठे थे। शूद्रमन्य रूस–जापान–अमेरिका और ब्रतानिया विश्व विजेता और आधुनिक इन्द्र ही शिल्प–कौशल के वल पर बने बैठे हैं। दूसरी ओर हमारे पोंगा–पण्ड़ित विदेशी यात्रा और व्यापार प्रतिबंध लगाकर हमें निपट निर्धन और परावलम्बी ही तो बना रहे थे। आज बजाय वैज्ञानिक विवेक सम्मत आधुनिक दृष्टि के एक बार हम फिर क्यों आत्ममुग्ध और कूप–मंडूक बनते चले जा रहे हैं। हम एक राष्ट्रीयता के स्थान पर धर्मिक संकीर्णता के शिकार निरन्तर क्यों होते चले जा रहे हैं। हमें आज एक बार फिर ऐसा लग रहा है कि हमने न तो स्वतंत्रता का सुदीर्घ संघर्ष ही किया है– और न ही किसी साँझी राष्ट्रीयता का ही विकास किया है। हम वही कहीं मध्यकाल में ही तो नहीं भटक रहे हैं।

कहाँ हमारे स्वतंत्राचेता नवनायकों ने एक सामाजिक या मिली–जुली संस्कृति या तहजीब की आधारशिला धर्मनिरपेक्षता और साम्प्रदायिक सद्भाव पर रखी थी। कहाँ हमारे आज नवनिर्वाचित सांस्कृतिक राष्ट्रवादी उस जातीय एकता को ही खंडित करने पर उतारू हैं। संघवाद और बहुलवाद हमारे संविधान सम्मत लोकतंत्रा के मूलभूत आधार–स्तम्भ है। वर्तमान काल में उन्हीं पर सर्वाधिक संघात हमारे सत्ताधीश कर रहे हैं। राज्यों को नख–दन्त विहीन और अधिकारहीन बनाकर बौने वामन की भाँति याचक तक बनाया जा रहा है। तो केन्द्र की सरकार को ही सर्वाधिकार सम्पन्न बनाकर अधिनायकवाद की अधिकारी बताया जा रहा है। जम्मू–कश्मीर में बिना वहाँ की विधन–सभा की सम्मति के ही धरा 370 का एकाएक एकान्त उन्मूलन ऐसा ही असंवैधानिक और अतार्किक अध्यादेश है। संसद में बहुमतीय दल बल से बिना किसी प्रकार के व्यापक विचार–विमर्श के बिलों को पास धक्के से किया जा रहा है। यह तो बहुमत की भेडियाधसान ही है। उधर समाज में अल्पसंख्यक लोगों को सिविल मिलेशिया की भीड़ अपना अचूक शिकार अकारण ही तो बना रही है। ऐसी स्थिति में हमें तो ऐसे लगता है कि हमारे कृषक नायक एक लम्बे संघर्ष के पश्चात जिस राजनीति को राज्यों की राजधानियों से गाँवों और गरीबों तक लेकर आये थे। जब से मत–पंथ की इस साम्प्रदायिक राजनीति का श्रीगणेश हुआ है तबसे राजशक्ति एक बार पुनः उन्हीं शहरी सवर्णों की चरणदासी बनने जा रही है। आजकल कहाँ भावनात्मक और साम्प्रदायिक मुद्दों पर ही अब चर्चाएँ होती हैं? समाज के मूलभूत विषय अब हमारे नये इन्द्रों के विचार के विषय कहाँ रह गये हैं। अतएव हम यही कहना चाहेंगें कि–

पहुँची खाक वहीं पै, जहाँ का खमीर था।

किसी चीज से प्रभावित न होना ही मुक्ति है। – स्वामी विवेकानंद

सावित्री देवी की गृहशिक्षिका थी, क्रान्तिकारिणी सुशीला दीदी

सावित्री देवी दानवीर सेठ छाजूराम लाम्बा की पुत्री थी

-तेजपाल सिंह, नई दिल्ली

मैं दिल्ली के सरकारी स्कूल में विज्ञान का अध्यापक था। तभी सन् 1972 में मैं बीमार हो गया। मनुष्य के अन्दर पड़े संस्कार बदलते नहीं है, मैं भी दिल्ली के चिकित्सकों को छोड़कर मेरठ के प्रसिद्ध डा. नौनिहाल के पास कन्सलटेशन के लिए पहुंच गया। वहां पता चला कि अब उनका पुत्र डा. ब्रजराज सिंह उनकी सीट पर बैठने लगा है और बड़े डाक्टर साहेब विशेष प्रार्थना पर ही मरीज को डिस्पेन्सरी के पीछे की ओर अपनी कोठी के पीछे के भाग में देखते हैं। डाक्टर साहेब मुझे देख रहे थे तो एक वृद्ध महिला जीने से नीचे उतर रही थी, वे लम्बी, पतली तथा गोरे वर्ण की थी। डाक्टर साहेब ने मुझे बताया कि ये सेठ छाजूराम लाम्बा की बेटी है। उन्होंने मुझसे पूछा क्या आप सेठ छाजूराम लाम्बा को जानते हो? मैनें झूठ बोल दिया हाँ साहेब जानता हूँ। जिनके बारे में मैने बाद में जानकारी हासिल की। डाक्टर नौनिहाल सिंह उस समय पश्चिम उत्तर प्रदेश के मारुफ मशरुफ व्यक्तित्व थे।

वह महिला डाक्टर साहेब की पत्नि सावित्री देवी थी। डाक्टर नौनिहाल सिंह एम.बी.बी.एस., एफ.आर.सी.एस. (इंग्लैड) थे। आप बड़े ही रुपवान उन्नत डीलडौल वाले प्रतिभावान व्यक्ति थे। डा. नौनिहाल सिंह के पिता अमृतपाणि डा. भूपालसिंह एम.पी. थे। वे यू.पी. के जाटों में सबसे पहले एम. पी. बने थे। उन्होने मेरठ में प्रैक्टिस की तथा आश्चर्यजनक सफलता और प्रसिद्धि प्राप्त की। उन्होंने मेरठ के बेगम पुल पर विशाल बाग खरीद कर अपनी कोठी बनाई। बाद में उन्होंने अन्य भी कई कोठिया बनाई। मेरठ में डा. भूपाल सिंह रोड़–पर दोनों तरफ उनकी ही कोठियाँ थी।

महात्मा गाँधी, पं. मोती लाल नेहरु, पं. जवाहर लाल नेहरु, सरदार बल्लभ भाई पटेल आदि नेता मेरठ में कई बार उनके अतिथि रहे थे। डाक्टर साहेब की गणना भारत के प्रसिद्ध चिकित्सकों तथा कुशल सर्जन के रुप में की जाती है। अखिल भारतीय जाट महासभा ने आपको रोहतक (हरियाणा) अधिवेशन का प्रैसिडेण्ट चुना था। आपने जाट महासभा में साईमन कमिशन का बायकाट तथा खादी पहिनने के प्रस्ताव पास कराए थे। आप लम्बे समय तक मेरठ कालिज मेरठ के सचिव रहे। डाक्टर साहेब इतने दयावान थे कि गरीब लोगों की मुफ्त चिकित्सा करके और निर्धन छात्रों को हजारों रुपये छात्रवृति देकर उन्होने पुण्य और यश कमाया। सन् 1919 में चौ० चरण सिंह कालेज में इन्टर विज्ञान के प्रथम वर्ष में दाखिला लेना चाहते थे, लेकिन धनाभाव था। डा. भूपाल सिंह उनके भाग्य विधाता बनकर सामने आये। डा. साहेब गरीबों तथा मेधावी छात्रों की सहायता करने हमेशा तत्पर रहते थे। जब उन्हें चौ० चरणसिंह की स्थिति का ज्ञान हुआ, तो उन्होने आगे बढ़कर इस होनहार युवक को दस रुपये प्रतिमाह की छात्रवृति प्रदान की जो उस समय एक बहुत बड़ी रकम थी। बाद में उन्होने अनुदान राशि बीस रुपये प्रतिमाह कर दी। ऐसी ही आर्थिक सहायता सेठ छाजूराम लाम्बा ने छात्र छोटूराम को आगरा में पढ़ने के लिये दी थी। डाक्टर भूपाल सिंह जी तथा सेठ छाजूराम लाम्बा बाद में एक दूसरे के समधी बन गये थे। चौधरी चरण सिंह देश के प्रधानमंत्री बने तथा सर छोटूराम पंजाब के रेवेन्यु मिनिस्टर बने।

दानवीर सेठ छाजूराम की सुपुत्री सावित्री देवी डा. भूपाल सिंह के होनहार पुत्र डा. नौनिहाल सिंह की धर्मपत्नि बनी। जब साण्डर्स के वध के बाद पुलिस क्रांतिकारियों पकड़ने के लिये भगत सिंह को लाहौर के चप्पे–चप्पे को खोज रही थी तथा सम्भावना थी की पुलिस उन्हें अवश्य खोज लेगी, उस समय भगतसिंह, दुर्गा देवी (पत्नि भगवती चरण वोहरा)को अपनी पत्नि के रुप में तथा पुत्र शचि को लेकर रेलगाड़ी से कलकत्ता निकल गये थे और सुशील दीदी को तार द्वारा कलकत्ता इतला भेज दी थी। स्टेशन पर उन्हें लेने भगवती चरण वोहरा के साथ सुशीला दीदी भी पहुंची थी। सुशीला दीदी सेठ छाजूराम लाम्बा की सुपुत्री सावित्री देवी की गृह शिक्षिका थी। कलकत्ता पहुंचने पर भगतसिंह तथा दुर्गा भाभी एक होटल में ठहरे तथा दूसरे दिन दानवीर सेठ छाजूराम के निवास स्थान पर चले गये। सेठ छाजूराम कलकत्ता की अलीपुर पौश कालोनी में रहते थे। वहां पर सी.आई.डी. आने का कोई खतरा नहीं था। सुशीला दीदी ने सेठ की पत्नि लक्ष्मी देवी से भगतसिंह को वहां निश्चिंतता से रहने की इजाजत दिलवाई थी। सुशीला दीदी तथा लक्ष्मी देवी के सिवाय भगतसिंह के परिचय के बारे में किसी को कोई पता नहीं था। भगतसिंह को अतिथ्य प्रदान करने से लक्ष्मी देवी तथा सेठ छाजूराम भारत के स्वतंत्रता संग्राम के नायकों की पंक्ति में खड़े हो गये और यह घटना उन्हें भारत के इतिहास में अमर कर गई। सात दिनों तक सेठ छाजूराम की कोठी में रहने के बाद भगतसिंह को सुरक्षित स्थान आर्यसमाज मंदिर में ठहरने का प्रबन्ध कर दिया गया। भगतसिंह तीन माह तक कलकत्ता में आर्यसमाज मंदिर में ठहरे थे। भगतसिंह जब नेशनल असेंबली नई दिल्ली में बम धमाका करने के लिए वहां से चले तो सुशीला दीदी ने अपने खून से उनके मस्तिष्क पर तिलक किया था। अप्रेल, 1929को भगतसिंह तथा बटुकेश्वर दत्त ने अपने स्थान पर खड़े होकर दिल्ली की 'नेशनल असेम्बली' में बम फैंक दिया। अंग्रेजों की अदालतों में नाटक खेला गया और 23 मार्च, 1931 कोतीनों क्रांतिकारियों भगतसिंह सुखदेव तथा राज गुरु को फाँसी दे दी गई। वर्ष 1947 में देश आजाद हो गया। देश के नेता आजादी का मजा लेने लगे, ऐशो आराम करने लगे। धन दौलत

धीरे–धीरे उन पर हावी होने लगा। आजादी के लिए जिन लोगों ने कुर्बानी दी थी। वे सरकारी खाते में शहीद भी नहीं रहे, शहीद अपमानित होने लगे, सिर का सौदा करने वाले शहीदों के स्थान पर भारत रत्न कोई और बन गये। खैर राजनीति में ऐसा होता है।

मैं 'राष्ट्र पुत्र भगतसिंह' नामक पुस्तक लिख रहा था तो सोचा कि सावित्री देवी से पूछ कर आऊं कि भगतसिंह क्या उनसे बातें करते थे, वे कैसे थे, तुम्हारे बाल मन पर उनका क्या प्रभाव पड़ता था। अतः मैं बेगम बाग, मेरठ स्थित उनकी कोठी पर पहुंच गया परन्तु देर हो चुकी थी। अब डाक्टर साहेब तथा सावित्री देवी इस संसार को छोड़ कर चले गये थे। अफसोस उनके वंश का कोई भी व्यक्ति मुझे नहीं मिला।

कहानी का एक महत्वपूर्ण पात्र सुशीला दीदी कौन थी? वे कहाँ से कलकता आई थी? आजादी के बाद उस क्रांतिकारिणी को कोई सम्मान मिला था या बस आजादी ही उनकी मेहनत का पारितोषित था।

जीवन परिचय

5 मार्च 1905 को पंजाब के दत्तोचूड़ (अब पाकिस्तान) में जन्मीं सुशीला दीदी की शिक्षा जालंधर के आर्य कन्या महाविद्यालय में हुई जहां वे सन् 1921 से 1927 तक रही। उनके पिता डॉ. कर्मचन्द्र सेना में चिकित्साधिकारी थे पर उनके ऊपर आर्य समाजी विचारों का गहरा प्रभाव था। सुशीला दीदी भाई–बहनों में सबसे बड़ी थीं। पिता फौज की नौकरी में थे। मां बचपन में ही नहीं रहीं इसलिए बच्चे गुजरांवाला में अपने चाचा के यहां रहते थे और बड़े होने के कारण भाई–बहनों को स्कूल भेजने लायक बड़ा होने तक उन्होंने घर का कामकाज संभाला। यही कारण था कि उनकी शिक्षा देर से हुई। इसी दौरान पंजाब से कुछ छात्राओं का एक दल देहरादून हिन्दी साहित्य सम्मेलन में हिस्सेदारी करने गया। इसमें सुशीला दीदी भी शामिल थी। वहां उनकी मुलाकात लाहौर के नेशनल कॉलेज से आए कुछ छात्रों से हुई जो क्रांतिकारी दल से जुड़े थे जिसमें कुमारी लज्जावती और शन्नो देवी ने सुशीला देवी के मन में देशभक्ति की आग भर दी। वे भगतसिंह आदि से भी परिचित थे। वहां दीदी भगवतीचरण और उनकी क्रांतिकारी पत्नी दुर्गा देवी (भाभी) से मिलीं। उन्हीं दिनों इन लोगों ने जांलन्दर में कुछ गुप्त क्रांतिकारी पर्चे बांटने का कार्य राष्ट्रीय भावनाओं से जुड़ाव रखने वाली लड़कियों को दिया। सुशीला दीदी ने भी उस समय इस जोखिम भरे कार्य को अपनी सहपाठिनी लीला के साथ मिलकर कुशलतापूर्वक संपन्न किया। कालान्तर में सुशीला देवी कन्या विद्यालय जालन्धर की स्नातक बनी तथा शन्नों देवी के महातहत अध्यापन करने लगी।

राष्ट्रभक्ति की कविताएं गाना उन्होंने छोटी आयु में ही आरम्भ कर दिया था। देशबन्धु चितरंजन दास एक बार लाहौर आए तो दीदी ने एक सार्वजनिक सभा में अपना एक पंजाबी गीत सुनाया जिस पर देशबंधु दास रो पड़े। भारत–कोकिला सरोजनी नायडू भी उनका गीत सुनकर भाव–विभोर हो उठी थी।

भगतसिंह का सेठ छाजूराम के यहां आश्रय

उस समय सुशीला दीदी कलकता में सेठ सर छाजूराम चौधरी की बेटी सावित्री की गुहशिक्षिका थी। छाजूराम बहूत बड़े आदमी थे जिन्हें अंग्रेजी सरकार ने 'सर' की उपाधि दी थी। पर वे राष्ट्रीय विचारों के थे। उन्होंने अपनी बेटी को मिशनरी स्कूल न भेजकर, जालधंर कन्या महाविद्यालय से ऐसी अध्यापिका की मांग की जो उनके घर पर रहकर उसे राष्ट्रीय संस्कारों की शिक्षा दे सके। वहां की प्रधानाचार्या श्रीमति शन्नों देवी ने सुशीला दीदी को अपने विद्यालय की नौकरी छुड़वाकर इस कार्य के लिए उन्हें कलकता छाजूराम जी के घर भेज दिया।

सुशीला दीदी सेठ जी के परिवार के साथ ही सेंट्रल एवेन्यू वाले मकान में रहती थी, जहां उनका अपना कमरा अलग था। उन्होंने थोड़े ही दिनों में उस परिवार का दिल जीत लिया। भगतसिंह जब फरार होकर कलकता आए तो दीदी ने उन्हीं के घर ठहराना उचित समझा। उन्होंने सेठ जी की पत्नी लक्ष्मीदेवी को सब कुछ बताकर इस जोखिम भरे कार्य के लिए तैयार कर लिया था। ऐसा था दीदी का सद्भाव और व्यक्तित्व। दीदी को लक्ष्मीदेवी ने भगतसिंह की सुरक्षा का वचन देते हुए कहा था, (भगतसिंह) हमारे बेटे की तरह रहेगा।' और यह वचन सेठ जी के परिवार ने पूरा भी कर दिखाया।

साहसिक कारनामें

यह जानना कितना रोमांचकारी है कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के समय काकोरी कांड़ के मुकदमें की पैरवी के लिए सुशीला दीदी ने अपनी शादी के लिए रखा हुआ दस तोला सोना उठाकर दान में दे दिया था। परिणाम स्वरूप काकोरी कांड में कई क्रांतिकारियों की प्राण रक्षा हुई।

दिल्ली में वायसराय की गाड़ी उड़ाने के काम में भी सुशीला दीदी ने भगवतीचरण को सहयोग दिया और फिर वापस कलकत्ता आ गई। लाहौर षड्यन्त्र केस में राजनीतिक बन्दियों के अधिकारों के लिए 63 दिन की भूख हड़ताल कर मृत्यु का वरण करने वाले क्रांतिकारी यतीन्द्रनाथ दास का शव जब कलकता पहुंचा, तब भी सुशीला दीदी ने उनकी आरती उतारी थी।

भगतसिंह और उनके साथियों पर जब 'लाहौर षड़यन्त्र केस' चला तो दीदी भगतसिंह के बचाव के लिए चंदा जमा करने कलकता पहुंची। सुभाष बाबू ने भवानीपुर में एक सभा करके दीदी को मंच पर बैठाया और जनता से 'भगतसिंह डिफेंस फंड' के लिए दान देने की अपील की। कलकता में दीदी ने इस अभियान के लिये अपनी अपील की। कलकता में दीदी ने इस अभियान के लिये अपनी महिला टोली के साथ 'मेवाड़ पतन' नाटक का मंचन करके भी बारह हजार रुपये जमा किए थे।

भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त को जेल से छुड़ाने की योजना बनी तो सुशीला दीदी कलकता की अपनी नौकरी छोड़कर पूरे समय दल के काम में लग गई। वे अपनी जगह छोटी बहन शांता (विवाह के बाद शांता बलदेव) को अपनी जगह नौकरी पर लगाकर कलकता से लाहौर आ गई। भगतसिंह और दत्त को जेल से छुड़ाने के लिए आजाद के नेतृत्व में दल के सदस्य रवाना हुए

तब भी सुशीला दीदी ने ही अपनी उंगली काटकर रक्त से उनके माथे पर टीका किया था।

गिरतारी के वारंटः

सुशीला दीदी के नाम तब दो गिरतारी वारंट थे। उन्हें पकड़वाने के लिए ईनाम घोषित किया गया था। फिर भी सन् 1932 में प्रतिबंधित कांग्रेस के दिल्ली अधिवेशन में वे 'इंदु' नाम से एक महिला टोली का नेतृत्व करते हुए जेल पहुंच गई और छह महीने की पूरी सजा काटकर बाहर आई लेकिन सरकार को असलियत का पता भी चला कि यह 'इंदु' ही सुशीला दीदी हैं। आगे चलकर दीदी भी एक दिन पुलिस के हाथ आ गई। उन्हें पार्लियामेंट स्ट्रीट वाले थाने में ले जाकर रखा गया परन्तु पुलिसवालों को भी उन पर मुकदमा चलाने का आधार नहीं मिला। इसके बाद पुलिस को आदेश मिला कि दीदी को चौबीस घंटे के अंदर छोड़ दिया जाये।

अब दीदी अपने घर पंजाब चली गई। वहीं सन् 1933 में उन्होंने दिल्ली के अपने सहयोगी वकील श्याम मोहन से विवाह कर लिया। इसके बाद वे 'सुशीला मोहन' बन गई। बयालिस आया तो दीदी ने इस बार पति के साथ ही 24 अक्तूबर 1942 को जेल यात्रा की। सरकार ने श्याम मोहन को दिल्ली और दीदी को लाहौर की जेल में रखा।

आजादी के सुशीला दीदी बाद पुरानी दिल्ली के बल्लीमारान में एक शिल्य विद्यालय का संचालन करने लगी थीं। आज विद्यालय के प्रधानाचार्य कक्ष में सुशीला दीदी का एक चित्र लगा हुआ है परन्तु कैसी विडम्बना है कि वहां उनके बारे में कोई नहीं जानता। अपने जीवन के बाद के दिनों में दीदी लगभग मौन रहने लगी थी। कोई कुछ कहता या पूछता तो वे खामोश रह जाती। कभी बोल फूटता भी तो यही कि जब देश को जरुरत थी, मैंने अपना फर्ज पूरा किया। अब कुछ कहुंगी तो लोग समझेंगे की उन सेवाओं का बदला चाहती हूँ।

झांसी वाले पंड़ित परमानन्द अनोखे क्रांतिकारी ने सुशीला दीदी को 'भारत की जोन आफॅ आर्क' कहा था। सचमुच दीदी थी भी इसी जीवट की। दीदी 3 जनवरी 1963 को इस निष्ठुर संसार को छोड़कर चली गई तथा इस दुनियां को त्याग और बलिदान का संदेश दे गई। दिल्ली में फतेहपुरी से चांदनी चौक घंटाघर तक जाने वाली सड़क का नाम 'सुशीला मोहन मार्ग' रखा गया है, लेकिन वहां सुशीला (दीदी) मोहन के नाम और उसके काम से कोई परिचित नहीं है। कुछ समय वे दिल्ली नगर निगम की सदस्य और दिल्ली कांग्रेस की अध्यक्ष भी रही। सुशीला दीदी ने ही पहले–पहल दुर्गा को भाभी कहना आरम्भ किया था। आज तक वे इसी नाम से प्रसिद्ध है।

भारतीय सेना 10 सर्वश्रेष्ठ अनमोल वचनः अवश्य पढ़ें इन्हें पढकर सच्चे गर्व की अनुभूति होती है..

1. "'मैं तिरंगा फहराकर वापस आऊंगा या फिर तिरंगे में लिपटकर आऊंगा, लेकिन मैं वापस अवश्य आऊंगा।'"

– कैप्टन विक्रम बत्रा, परम वीर चक्र

2. "'जो आपके लिए जीवनभर का असाधारण रोमांच है, वो हमारी रोजमर्रा की जिंदगी है।' "

– लेह–लद्दाख राजमार्ग पर साइनबोर्ड (भारतीय सेना)

3. "'यदि अपना शौर्य सिद्ध करने से पूर्व मेरी मृत्यु आ जाए तो ये मेरी कसम है कि मैं मृत्यु को ही मार डालूँगा।'"

– कैप्टन मनोज कुमार पाण्डे, परम वीर चक्र, 1/11 गोरखा राइफल्स

4. "'हमारा झण्डा इसलिए नहीं फहराता कि हवा चल रही होती है, ये हर उस जवान की आखिरी साँस से फहराता है जो इसकी रक्षा में अपने प्राणों का उत्सर्ग कर देता है।'"

– भारतीय सेना

5. "'हमें पाने के लिए आपको अवश्य ही अच्छा होना होगा, हमें पकडने के लिए आपको तीव्र होना होगा, किन्तु हमें जीतने के लिए आपको अवश्य ही बच्चा होना होगा।'"

– भारतीय सेना

6. "'ईश्वर हमारे दुश्मनों पर दया करे, क्योंकि हम तो करेंगे नहीं।"' – भारतीय सेना

7. "'हमारा जीना हमारा संयोग है, हमारा प्यार हमारी पसंद है, हमारा मारना हमारा व्यवसाय है।'

– ऑफीसर्स ट्रेनिंग अकादमी, चेन्नई

8. "'यदि कोई व्यक्ति कहे कि उसे मृत्यु का भय नहीं है तो वह या तो झूठ बोल रहा होगा या फिर वो इंडियन आर्मी का ही होगा।'"

– फील्ड मार्शल सैम मानेकशॉ

9. "'आतंकवादियों को माफ करना ईश्वर का काम है, लेकिन उनकी ईश्वर से मुलाकात करवाना हमारा काम है।'"

– भारतीय सेना

10. "'इसका हमें अफसोस है कि अपने देश को देने के लिए हमारे पास केवल एक ही जीवन है।'"

वैवाहिक विज्ञापन

- *SM4 Jat Girl (DOB 29.02. 92) 27/5'4" M.Sc Physics from P.U. Chandigarh, B.Ed, CTET cleared. Avoid Gotras: Dalal, Dagar, Singhmar, Sindhu. Cont. 9463330394*
- *SM4 Jat Girl (DOB 13.09. 92) 26/5'2" B.Sc (Math) M.Sc (Math with computer science). B.Ed, HTET, CTET, RTET, NET qualified. Avoid Gotras: Jatain, Dahiya, Dhatarwal. Cont. 8901273699, 8901273698*
- *SM4 Jat Girl (DOB 18.08. 96) 23/5'2" B.Sc Hons. (Zoology) Pursuing M.Sc. Hons (Zoology) from P. U. Chandigarh. Avoid Gotras: Jatain, Dahiya, Dhatarwal. Cont. 8901273699, 8901273698*
- *SM4 Jat Girl (DOB 07.11. 92) 26/5'2" B.Sc, M.Sc. (Physics) from P. U. Chandigarh. B.Ed. Father government employee in Education Department Haryana. Mother government employee in college cadre. Avoid Gotras: Rathi, Ahlawat, Jakhar. Cont. 9466905848*
- *SM4 Jat Girl (DOB 27.01.94) 25/5'2" M.Sc,(Physics) from P. U. Chandigarh. B.Ed. Doing PHD from P. U. Chandigarh. Avoid Gotras: Kadian, Phalswal, Dahiya. Cont. 9888955626*
- *SM4 Jat Girl (DOB 14.09.93) 25/5'4" B.Com, M.Com, BEd. Employed as accounts Clerk in electricity department in Head office Panchkula. Avoid Gotras: Dabas, Punia, Barak. Cont. 9466240260, 8360294427*
- *SM4 Jat Girl (DOB Oct.93) 25/5' B. Tech Electronics & Communications from GJU, Hisar. Avoid Gotras: Nain, Redhu, Seokand. Cont. 9613166296, 9416942029*
- *SM4 Jat Girl (DOB Jan. 95) 24/5'1" B. Com from Hisar. Avoid Gotras: Nain, Redhu, Seoukand. Cont. 9613166296, 9416942029.*
- *SM4 Jat Girl (DOB 05.04.90) 29/5'2" M.A., BEd, JBT. Employed as Govt. Teacher (JBT) in U.T. Cadre. Avoid Gotras: Malik, Punia, Mudad. Cont. 8930243505*
- *SM4 divorced Jat Girl (DOB 20.02.85) 34/5'4" B.Sc, B.Ed, M.Sc (Math). Tricity match preferred. Avoid Gotras: Gill, Rathi, Goyat. Cont. 6239563927*
- *SM4 divorced Jat Girl (DOB 1985) 34/5'4" MA, (English) B.Ed, Working as Govt. PGT regular Teacher at Ambala. Avoid Gotras: Nehra, Khatri (Direct Rathi). Cont. 8816977305, 9416986302*
- *SM4 Jat Girl (DOB 1989) 30/5'2" B. Tech (Bio-Medical) from PTU. M.Tech (Instrumentation) from P. U. Chandigarh. Avoid Gotras: Dhull, Goyat, Bhall. Cont. 9467671451*
- *SM4 Jat Girl (DOB 26.07.95) 24/5'2" GNM, BSc Nursing from MMU Mulana, Ambala. Avoid Gotras: Chhikara, Saroha, Malik, Dahiya. Cont. 9560857397, 9467630182*
- *SM4 Jat Girl (DOB 03.10.92) 26/5'5" BSc, MSc Physics from P.U. Chandigarh. BEd. HTET, CTET cleared. Employed TGT Science in Janendra Public School Panchkula. Family settled in Panchkula. Avoid Gotras: Gehlayan, Khatkar, Chhikara, Boora. Cont. 7009312721, 9467630182*
- *SM4 Jat Girl (DOB 02.11.93) 25/5'3" MA (English), JBT, BSc Non-medical, Employed in a reputed Company at Mohali. Avoid Gotras: Mann, Malik, Jaglan. Cont. 9416650693*
- *SM4 Jat Girl (DOB 14.10.93) 25/5'4" M.Sc Math. Avoid Gotras: Joon, Bakhal, Sangwan, Gahlayan. Cont. 9467311110*
- *SM4 Jat Girl (DOB April 89) 30/5'4" MCA from P. U. Chandigarh, Employed in Punjab & Haryana High Court. Avoid Gotras: Sheoran, Punia, Sangwan. Cont. 9988359360*
- *SM4 Jat Girl 25/5'4" B.Sc, BEd., MSc Math, Employed as Math teacher in coaching centre. Parents Government employees. Avoid Gotras: Kaliraman, Panwar, Jani. Cont. 9416083928*
- *SM4 Jat Girl (DOB August 90) 28/5'3" B.Tech)CSC) MBA, Employed in reputed Consultant (MNC) Earnst & Young Company. Father retired, Mother self employed. Avoid Gehlan, Kashyap, Dagar. Cont. 9417055709, 9464989509*
- *SM4 Jat Girl (DOB 18.04.91) 28/5'3" BPT, MPT CMT, Employed as consultant Physiotherapy in private Hospital in Panchkula. Avoid Gotras: Chhikara, Dahiya, Bajar. Cont. 9467680428*
- *SM4 Jat Girl (DOB 07.05.90) 29/5'5" M.Sc Bio Informatics, BSc Biotechnology. Working in Research Company with package 3.7 lakh PA. Father ex-IAF. Now working in Haryana govt. Brother, Bhabi working in UK. Avoid Gotras: Katira, Khatkar, Boora. Cont. 9988643695, 6283129270*
- *SM4 Jat Girl (DOB 28.02.87) 32/5'2" BSc. MSc. Hons. in Physics, PhD in Physics. Working as Assistant Professor in Physics on regular basis in Chandigarh. Avoid Gotras: Malik, Kaliraman, Dahiya. Cont. 9988336791*
- *SM4 divorced Jat Girl (DOB 12.05.88) 30.10/5'2" BSc. (MLT), MSc (MLT) from Punjab Technical University Jallandhar. Working as Lab Incharge in reputed Paras Hospital Sector 22, Panchkula. Father in Government job at Panchkula. Avoid Gotras: Mittan, Kharb, Dahiya. Cont. 8146082832.*
- *SM4 Jat Girl (DOB 29.11.89) 30/5'4" M.Sc Chemistry, Doing job in School. Avoid Gotras: Hooda, Lamba, Pawria. Cont. 9416849287*
- *SM4 Jat Girl (DOB 18.08.91) 28/5'3" Diploma, B.Tech in Electrical Communications from Rohtak. Avoid Gotras: Pawria, Ahlawat, Nandal. Cont. 9811658557*
- *SM4 Jat Girl 27/5'4" Graduation from Kurukshetra University, GNM from Pt. Bhagwat Dayal Sharma University Rohtak. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont. 9354839881*
- *SM4 Jat Girl (DOB 13.10.91) 27/5'5" BA, LLB (Hons.), LLM Pursuing Ph.D from M.D.U. Rohtak. Advocate in Punjab & Haryana High Court. No dowry seeker. Preferred match from Chandigarh, Panchkula, Mohali. Own flat at Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Deswal. Cont. 9417333298*

- *SM4 Jat Girl 27/5'5" M.Com, MBA, Working in government bank as officer in Panipat, Family settled in Bhiwani. Avoid Gotras: Gawaria, Sangwan, Sunda. Cont. 9646519210*
- *SM4 Jat Girl (DOB Oct. 86) 32/5'5" MSc (Geography), M.Phil, PhD (pursuing from Punjab University since March, 2015) NET, JRF qualified. Father retired Haryana government officer. Avoid Gotras: Panghal, Dalal, Sangwan. Cont. 9646404899*
- *SM4 Jat Girl (DOB 08.11.89) 29/5'3" Employed as staff nurse in Government hospital. Father Govt. job. Avoid Gotras: Dahiya, Kajla, Ahlawat. Cont. 9463881657*
- *SM4 Jat Boy (DOB 1990) 29/5'6" B.Tech. Working as J. E. in Metro Railway Delhi. Required Govt. job girl. Avoid Gotras: Dhull, Goyat, Bhall. Cont. 9467671451*
- *SM4 Jat Boy (DOB 24.08.90) 29/5'8" B.Tech. in Mechanical Engineer from Dehradun , Two time Gate qualified. One time IES pre qualified. Employed in Ministry of MSME (MSME technology centre, Rohtak) as Senior Engineer. Family settled in Panchkula. Avoid Gotras: Redhu, Nara, Lathar. Cont. 9815188255*
- *SM4 Jat Boy 29/6'2" B.Tech. Employed as Inspector CBI. Preferred highly qualified working girl with at least 5'4" height. Avoid Gotras: Khasa, Dahiya, Lathwal, Mor. Cont. 9023492179*
- *SM4 Jat Boy (DOB 11.06.92) 27/5'11" B.Tech. Extra qualification Army Shooting Champion Swimmer. Employed as Captain Army EME. Father Veternary Surgeon at Karnal. Mother TGT at Karnal. Avoid Gotras: Jaglan, Savant, Goyat. Cont. 9416285090*
- *SM4 Jat Boy (DOB 08.10.90) 28/5'11" B.C.A, Working as Office Assistant in Haryana Gramin Bank. Avoid Gotras: Dahiya, Sehrawat, Chhikara. Cont. 9417091551*
- *SM4 Jat Boy 28/6'2" IRS, Employed in Chandigarh Zone. Preferred Professor or from Civil Service. Avoid Gotras: Malik, Rathi, Chhikara. Cont. 9812183264*
- *SM4 Manglik Jat Boy (DOB 24.09.90) 28/5'7" B.Tech in Mechanical Engineering from Mulana University, Ambala. Employed as Upper Division Clerk in Chandigarh Administration. Family settled in Chandigarh. Avoid Gotras: Hooda, Kadian, Dalal. Cont. 7973036732*
- *SM4 Jat Boy (DOB 06.06.90) 29/5'7" B. Com, M.A. 2nd Year. Employed in Government job in U. T. Secretariat Chandigarh. Avoid Gotras: Dahiya, Malik, Bura. Cont. 9050016311*
- *SM4 Jat Boy (DOB 13.01.91) 28/5'9" MBA. Employed as P. O. in Bank of in Baroda. Avoid Gotras: Narwal, Mann, Duhan. Cont. 9417579758*
- *SM4 (Dr.) Jat Boy (DOB 02.09.85) 33/5'8" BDS Banglore. Father Retired Principal, Mother MA, BEd. Two sisters BDS/ MBBS. Brother one BDS. Six acre agriculture land. Own Plots, flats and clinic. Required BDS, BAMS, BHMS, Nurse. Avoid Gotras: Deswal, Dahiya, Mor. Cont. 9868092590*
- *SM4 Jat Boy (DOB 10.03.90) 29/5'11" BSc in H.M. Employed in railways. Avoid Gotras: Punia, Sangwan, Sheoran. Cont. 9815304886*
- *SM4 Jat Boy (DOB 11.11.93) 26/5'8" MSc Physics. Employed as Central Excise Inspector. Preference government employee with height 5'4". Avoid Gotras: Chahal, Dangi, Bagri. Cont. 9416561365*
- *SM4 Jat Boy (DOB 07.08.93) 26/5'8" B.V. Sc., Employed in Government job on contract basis at Rohtak. Avoid Gotras: Gehlan, Khatkar, Malik, Boora. Cont. 9467630182*
- *SM4 Jat Boy (DOB February, 89) 29/5'11" MBBS. M.O. in Haryana. Father retired from Haryana government. Employed as Auditor in Audit & Accounts Department (C & AG of India). Avoid Gotras: Sangwan, Datarwal, Legha. Cont. 8058980773*
- *SM4 Jat Boy (DOB 19.09.86) 32/5'11" Employed as Major in Army. Avoid Gotras: Malik, Ahlawat, Sangwan, Dhaka. Cont. 9050422041*
- *SM4 Jat Boy (DOB 3.10.90) 28/6' B.Tech, Employed as Auditor in Audit & Accounts Department (C & AG of India). Avoid Gotras: Dhankhar, Suhag, Sangwan. Cont. 8219949508*
- *SM4 Jat Boy (DOB 26.05.92) 26/5'8" B.Tech Mechanical, Own factory at Panchkula (PCB Manufacturing). Father Govt. job. Avoid Gotras: Dahiya, Kajla, Ahlawat. Cont. 9463881657*
- *SM4 Jat Boy 25/6'2" B.A. Employed in Kotak Mahendra Bank. Avoid Gotras: Malik, Sindhu, Tehlan. Cont. 9872716234*

हमें जिन पर गर्व है

PRANJAL BANIWAL

Grand daughter of Sh. Baljit Singh Baniwal & Suman Lata, House No. 1512, Sector-15, Panchkula got AIR-282 in JEE Advanced 2019 and has got admission in IIT, Bombay in Computer Science and Engineering.

JAT SABHA Chandigarh/Panchkula cngratulate her and her family on her excelent achievement.

डा0 एम एस मलिक, (आईपीएस सेवा निवृत)
भूतपूर्व पुलिस महा निदेशक, हरियाणा

चेयरमैन
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, जम्मु
अध्यक्ष, जाट सभा, चंडीगढ़
दूरभाष : 0172-2641127, 2654932
Email : jat_sabha@yahoo.com

आर्थिक अनुदान की अपील

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि जाट सभा चंडीगढ़ द्वारा 6 जून 2019 को गांव कोटली बाजालान-नोमैई कटरा जम्मु में जी टी रोड़ पर 10 कनाल भूमि की भू-स्वामी श्री संतोष कुमार पुत्र श्री बदरी नाथ निवासी गांव कोटली बाजालान, कटरा, जिला रियासी (जम्मु) के साथ लंबी अवधि के लिए लीजडीड पंजीकृत की गई है। इस भूमि का इंतकाल भी 6 जुलाई 2019 को जाट सभा चंडीगढ़ के नाम दर्ज हो गया है। इस प्रकार इस भूमि पर जाट सभा चंडीगढ़ का पूर्ण स्वामीत्व स्थापित हो चुका है, जिस पर शीघ्र ही 5 मंजिले यात्री निवास भवन का निर्माण शुरू किया जाएगा।

यात्री निवास भवन का शिलान्यास व दीन बंधु चौधरी छोटू राम की विशालकाय प्रतिमा का अनावरण 10 फरवरी 2019 को बसंत पंचमी उत्सव एवं दीन बंधु चौधरी छोटूराम की 136वीं जयंती समारोह के दौरान महामहिम राज्यपाल, जम्मु काश्मीर माननीय श्री सत्यपाल मलिक द्वारा तत्कालीन केंद्रीय मंत्री चौधरी बीरेंद्र सिंह, केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पीएमओ डा0 जितेंद्र सिंह व जाट सभा के अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक डा0 एम एस मलिक, भा0पु0से0 (सेवा निवृत) की उपस्थिति में संपन्न किया गया।

यात्री निवास भवन एक लाख बीस हजार वर्ग फुट में बनाया जाएगा जिसमें फैमिली सुईट सहित 300 कमरे होगें। भवन परिसर में एक मल्टीपर्पज हाल, कांफ्रें स हाल, डिस्पैंसरी, मैडीकल स्टोर, लाईब्रेरी, बच्चों की प्रतिभा विकास एवं विभिन्न व्यवसायिक व सुरक्षा संबंधी सेवाओं में प्रवेश के लिए कोचिंग की विशेष सुविधाएं उपलब्ध होगीं। सुरक्षा सैनिकों, शहीद परिवारों व उनके आश्रितों के लिए मुफ्त ठहरने तथा माता वैष्णों देवी के श्रद्धालुओं के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएगीं।

आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार अनुदान देने की कृपा करें। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतू 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा और उसे भवन में आजीवन मुफ्त ठहरने की सुविधा प्रदान की जाएगी। जम्मु काश्मीर के भाई-बहन व दानवीर सज्जन इस संबंध में चौधरी छोटु राम सेवा सदन के अध्यक्ष श्री सर्बजीत सिंह जोहल (मो0नं0 9419181946), श्री भगवान सिंह उप प्रधान (मो0नं0 8082151151) व केयर टेकर श्री मनोज कुमार (मो0नं0 9086618135) पर संपर्क कर सकते हैं। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम जाट सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2-बी, सैक्टर 27-ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर टी जी एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड- एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है।

अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80-जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

IAS Ram Niwas Remembered for his Services

The Members of the Jat Sabha Chandigarh and Panchkula, Akhil Bhartiya Shaheed Samman Sanghrash Samiti and Chaudhary Chhotu Ram Sewa Sadan (Jammu) expressed grief and condolences on the untimely demise of the Haryana Police Complaints Authority Chairperson Ram Niwas.

Former Haryana DGP MS Malik, who is the President of Chandigarh Jat Sabha, said that Ram Niwas believed in hard work, struggle and simplicity throughout his carrier as an IAS Officer. "He remained a torch bearer for the promotion and development of Haryanvi arts, culture. He was a staunch admirer of rural fraternity and extended prompt help and guidance to the Down-trodden."

According Malik, Ram Niwas remained associated with various institutions to render cooperation for welfare.

हम आजाद तभी पाते हैं, जब हम अपने जीवित रहने के अधिकार का पूरा मूल्य चुका देते हैं। – रवीन्द्रनाथ टैगोर

शोक संदेश

हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक व जाट सभा चण्डीगढ़ व पंचकूला के अध्यक्ष एवं चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा (जम्मू) के चैयरमेन डॉ० एम.एस. मलिक, आई.पी.एस (सेवानिवृत) की अध्यक्षता में सभाओं की कार्यकारिणी की मीटिंग हुई, जिसमें हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री चौ० औमप्रकाश चौटाला की धर्मपत्नी स्नेहलता चौटाला के निधन पर गहरा दुख एवं संवेदनाएं व्यक्त की गई।

श्रद्धाजंलि सभा के दौरान शोक संदेश में डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक ने कहा कि स्वर्गीय स्नेहलता चौटाला धार्मिक, दयालु और समाजिक महिला थी जो समाज सेवा के कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेती थी। वास्तव में वह भारतीय महिला सशक्तिकरण की आदर्श प्रतिमूर्ति थी। स्नेहलता ने अपने जीवन में आम जनता विशेषकर गरीब लोगों, असहाय बच्चों और ग्रामीण क्षेत्र के कमजोर वर्गों के कल्याण के लिए प्रयास किए। अपने जीवन काल में अनेक सामाजिक कार्य करने वाली स्वर्गीय स्नेहलता चौटाला प्रदेश की महिलाओं के लिए एक प्रेरणादायक रही हैं, जिनके जीवन काल से अध्ययन करने पर सभी महिलाओं को कुछ ना कुछ सीखने को मिल सकता है। उनके निधन से समाज को काफी क्षति हुई है।

कार्यकारिणी के सभी सदस्यों ने परमपिता परमेश्वर से दिवगंत आत्मा को आत्मिक शांति प्रदान करने तथा शोक संत्पत परिवार के सदस्यों को इस असहनीय आघात को सहन करने की शक्ति प्रदान करने हेतु अरदास की।

सम्पादक मंडल

संरक्षक एवं सम्पादक : **डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)**
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़
जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020 **RNI No. CHABIL/2000/3469**

मुद्रक प्रकाशन एवं संरक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172-2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।